ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै

करो प्रेम से दुर्गा पूजा आए मैय्या के

नवरात्रों का नौ दिन का पाठ

चैत्र एवं आश्विन माह के नवरात्रों की सरल पूजा,
सम्पूर्ण कथा, उसका विधान, चालीसा तथा आरती।

विषय सूची

1. दुर्गा-पूजा पाठ विधि तथा सामग्री 3
2. सामग्री 4
3. प्रार्थना 5
4. शैलपुत्री 6
5. नव दुर्गा प्रार्थना 7
6. देवी कवच 9
7. श्री अर्गला स्तोत्र 15
8. श्री कीलक स्तोत्र 18
9. रात्रि सूक्त 20
10. ब्रह्मचारिणी 22
11. भगवती की महिमा तथा मधु कैटभ वध 23
12. देवीजी का प्रादुर्भाव व महिषासुर की सेना का वध 32
13. चन्द्रघण्टा 39
14. महिषासुर का वध 40
15. देवताओं द्वारा देवी की स्तुति 45
16. कूष्माण्डा 52
17. देवी की स्तुति-अम्बिका के रूप की प्रशंसा 53
18. धूम्र लोचन-वध 60
19. स्कन्दमाता 62
20. चण्ड-मुण्ड का वध 63
21. रक्तबीज वध 66
22. कात्यायनी 72
23. निशुम्भ वध 73
24. शुम्भ वध 77
25. कालरात्रि 80
26. देवी देवताओं द्वारा देवी की स्तुति एवं देवी द्वारा देवताओं को वरदान 81
27. देवी चरित्रों के पाठ का महात्म्य 88
28. महागौरी 92
29. राजा सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान 93
30. देवी सूक्तम् 95
31. अपराध क्षमापन स्तोत्र 96
32. सिद्धकुंजिका स्तोत्र 98
33. नवरात्रों में कन्या पूजन 100
34. सिद्धिदात्री 101
35. माँ का भोग 102
36. श्री दुर्गा चालीसा 104
37. श्री विन्ध्येवरी चालीसा 108
38. विन्ध्येश्वरी स्तोत्र 111
39. आरती श्री दुर्गा जी की 112

* * *

दुर्गा-पूजा पाठ विधि तथा सामग्री

श्री दुर्गा-पूजा विशेष रूप से प्रतिवर्ष दो बार चैत्र व आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पड़वा) से प्रारम्भ होकर नवमी तक चलती है। देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा होने के कारण नवदुर्गा तथा नौ तिथियों (दिन) में पूजन होने से इन्हें नवरात्र कहा जाता है। चैत्र मास के नवरात्र 'वार्षिक नवरात्र' और आश्विन मास के नवरात्र 'शारदीय नवरात्र' कहलाते हैं।

भगवती दुर्गा के साधक भक्त स्नानादि से शुद्ध होकर, शुद्ध वस्त्र धारण कर पूजा स्थल को सजाएँ। मण्डप में श्री दुर्गा की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए। मूर्ति के दाईं ओर कलश की स्थापना करनी चाहिए तथा कलश के सम्मुख मिट्टी व बालूरेत मिलाकर जौं बोने चाहिएँ। मण्डप के पूर्व कोण में दीपक की स्थापना करनी चाहिए। पूजन में सबसे पहले गणेश जी की पूजा करके सभी देवी-देवताओं की पूजा करें। तत्पश्चात् जगदम्बा का पूजन करें।

सप्तशती का पाठ न तो जल्दी-जल्दी करना चाहिए और न बहुत धीरे-धीरे। पाठ करते समय एक ही आसन से निश्चित हो अचल बैठना चाहिए।

सामग्री

जल, गंगाजल, पंचामृत, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, रेशमी वस्त्र, उपवस्त्र, नारियल, चन्दन, रोली, कलावा, अक्षत, पुष्प, पुष्पमाला, जयमाला, धूप, दीप, नेवैद्य, ऋतुफल, पान, सुपारी, लौंग, इलाइची, आसन, चौकी, पूजन पात्र आरती, कलश।

नवदुर्गा की प्रार्थना करने से पहले मस्तक पर भस्म, चन्दन, रोली का टीका लगाना चाहिए। नवदुर्गा की प्रार्थना के पश्चात् कवच का पाठ करना चाहिए। इसके बाद अर्गला और कीलक का पाठ करें। इसके पश्चात् रात्रि सूक्त का पाठ करें। इतना कर लेने के बाद सप्तशती का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए।

श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ 13 अध्यायों में वर्णित है। इन 13 अध्यायों में माँ भगवती के तीन चरित्रों का वर्णन है।

प्रथम चरित्र– पहले अध्याय में 'मधु व कैटभ' नामक दो राक्षसों के वध का वर्णन है।

द्वितीय चरित्र– इसमें दूसरे अध्याय से चतुर्थ अध्याय तक महिषासुर नामक राक्षस के वध का वर्णन किया गया है।

तृतीय चरित्र– इसमें पंचम अध्याय से ग्यारहवें अध्याय तक शुम्भ-निशुम्भ आदि राक्षसों के वध का वर्णन किया गया है।

बारहवें अध्याय में आदिशक्ति माँ के तीनों चरित्रों का पाठ करने का महत्त्व बताया गया है।

तेरहवें अध्याय में राजा सुरथ एवं समाधि नामक वैश्य को देवी द्वारा दिए वरदानों का वर्णन किया गया है।

नौ दिनों में इन 13 अध्यायों का पाठ करके अन्तिम दिन (नवें दिन) माँ का भोग, दुर्गा चालीसा, विन्ध्येश्वरी चालीसा, स्तोत्र एवं आरती करके समापन करते हैं।

प्रार्थना

हे करुणामयी, जगजननी, स्नेहमयी एवं आनन्द देने वाली माँ! आपकी सदा जय हो। हे जगदम्बे! पंखहीन पक्षी और भूख से बिलबिलाते बच्चे जिस प्रकार अपनी माँ की प्रतीक्षा करते हैं, उसी प्रकार मैं भी आपकी दया की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। हे अमृतमयी माँ! आप शीघ्रताशीघ्र मुझे दर्शन देने की कृपा करें। मुझे ऐसी बुद्धि प्रदान करिए जिससे मैं आपका रहस्य जान सकूँ।

पहला दिन

१. शैलपुत्री

वन्दे वांछितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

माँ दुर्गा का पहला स्वरूप शैलपुत्री का है। पर्वतराज हिमालय के यहाँ पुत्री के रूप में उत्पन्न होने के कारण इनको शैलपुत्री कहा गया। यह वृषभ पर आरूढ़ दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएँ हाथ में कमल पुष्प धारण किए हुए हैं। यह नव दुर्गाओं में प्रथम दुर्गा हैं। नवरात्र पूजन में पहले दिन इन्हीं का पूजन होता है। प्रथम दिन की पूजा में योगीजन अपने मन को 'मूलाधार' चक्र में स्थित करते हैं। यहीं से उनकी योग साधना शुरू होती है।

पाठ आरम्भ

नव दुर्गा प्रार्थना

जय-जयकार करो माता की, आओ शरण भवानी की।
एक बार सब प्रेम से बोलो, जय दुर्गे महारानी की॥
पहली देवी शैलपुत्री हैं, किए बैल पर सवारी।
अर्ध चन्द्र माथे पर सोहे, सुन्दर रूप मनोहारी॥
लिए कमण्डल फूल कमल और रुद्राक्षों की माला।
हुई दूसरी ब्रह्मचारिणी, करें जगत में उजियाला॥
पूर्णचन्द्रमा सी शोभित है देवी चन्द्रघण्टा माता।
इनके सुमिरन निर्बल भी, सबल शत्रु पर जय पाता॥
चौथी देवी कूष्माण्डा हैं, इनकी लीला है न्यारी।
अमृत भरा कलश है कर में, किए बाघ की सवारी॥

कर में कमल सिंह पर आसन, सबका शुभ करने वाली।
मंगलमयी स्कन्दमाता हैं, जग के दुःख हरने वाली॥
मुनि कात्यायन की कन्या हैं, सबकी कात्यायनी माँ।
दानवता की शत्रु और मानवता की सुखदायनी माँ॥
सप्तम कालरात्री हैं, देवी महाप्रलय ढाने वाली।
प्राणी मात्र का रक्षण करतीं, महाकाल को खाने वाली॥
श्वेत बैल है वाहन जिनका, तन पर श्वेताम्बर माला।
यही महागौरी देवी हैं, सबकी जगदम्बा माता॥
शंख, चक्र और गदा पद्म, कर में धारण करने वाली।
यही सिद्धिदात्री देवी हैं, ऋद्धि-सिद्धि देने वाली॥
जय कल्याणमयी नवदुर्गे, जय हो शक्तिदायनी माँ।
जयति-जयति चण्डी नवदुर्गे, जय गिरिजा महारानी माँ॥

देवी कवच

मार्कण्डेय जी ने कहा– "हे पितामह! जो साधन संसार में अत्यंत गोपनीय हैं, जिनसे मनुष्य मात्र की रक्षा होती है तथा आपने अब तक जिसे किसी से भी प्रकट नहीं किया है, वह साधन मुझे बताइए।"

ब्रह्माजी ने कहा– "हे ब्रह्मन्! सम्पूर्ण प्राणियों का कल्याण करने वाला देवी का कवच अत्यन्त गोपनीय है, हे महामुने! उसे सुनिए। हे मुने! दुर्गा की नव शक्तियों में पहली शक्ति का नाम शैलपुत्री है। दूसरी शक्ति का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरी शक्ति का नाम चन्द्रघण्टा है। चौथी और पाँचवीं शक्ति का नाम क्रमशः कूष्माण्डा और स्कन्दमाता है। छठी शक्ति का नाम कात्यायनी है। साँतवी, आठवीं और नवीं शक्तियों के नाम क्रमशः कालरात्री, महागौरी और सिद्धिदात्री है।

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं से घिर गया हो तथा अत्यन्त कठिन विपत्ति में फँस गया हो; यदि वह भगवती दुर्गा की शरण का सहारा ले ले तो उसका कभी युद्ध या संकट में कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। उसे कोई विपत्ति घेर नहीं सकती और न उसे कोई शोक, दुःख तथा

भग्र की प्राप्ति ही हो सकती है। जो प्राणी भक्ति-पूर्वक भगवती का स्मरण करते हैं, उनका अभ्युदय होता रहता है। हे भगवती! जो लोग तुम्हारा स्मरण करते हैं, निश्चय ही तुम उनकी रक्षा करती हो।

प्रथम चामुण्डा देवी प्रेत के वाहन पर आरूढ़ रहती हैं। वाराही महिष के आसन पर रहती हैं। एन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है, वैष्णवी का वाहन गरुड़ है। माहेश्वरी बैल के वाहन पर तथा कौमारी मोर के वाहन पर विराजमान हैं। श्री विष्णु पत्नी भगवती के हाथों में कमल है तथा वे कमल के आसन पर निवास करती हैं। श्वेत वर्ण वाली ईश्वरी वृष पर सवार हैं। सरस्वती सम्पूर्ण आभूषणों से युक्त हैं तथा वे हंस पर विराजमान रहती हैं।

अनेक आभूषणों तथा रत्नों से देदीप्यामान सभी देवियाँ सभी योग-शक्तियों से युक्त होती हैं। इनके अलावा और भी देवियाँ हैं जो दैत्यों के विनाश के लिए तथा भक्तों की रक्षा के लिए क्रोध-युक्त होकर रथ में सवार हैं तथा इनके हाथों में शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल, मूसल है। खेटक, तोमर, फरशु, पाश, भाला, त्रिशूल तथा उत्तम शङ्गि धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र विराजमान हैं, जिनसे देवताओं की रक्षा होती है तथा देवी जिन्हें दैत्यों की देहनाश तथा भक्तों के मन में भयनाश के लिए धारण करती हैं। महाभय का विनाश करने वाली, महानबल, महाघोर कर्म तथा महान उत्साह से

सुसम्पन्न, हे महारौद्रे! तुम्हें नमस्कार है।

हे शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली देवी! तुम मेरी रक्षा करो। दुर्धर्ष तेज के कारण मैं तुम्हारी ओर देख भी नहीं सकता। एन्द्रीशक्ति पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें तथा अग्नि देवता की आग्नेय शक्ति अग्नि कोण में हमारी रक्षा करें। वाराही शक्ति दक्षिण दिशा में, खड्गधारिणी नैऋत्य कोण में, वारुणी शक्ति पश्चिम दिशा में तथा मृग के ऊपर सवार रहने वाली शक्ति वायव्य कोण में हमारी रक्षा करें।

कौमारी उत्तर दिशा में, ईश्वरी शक्ति ईशान कोण में, ब्रह्माणी शक्ति ऊपर तथा वैष्णवी शक्ति नीचे हमारी रक्षा करें। चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में हमारी रक्षा करें। आगे जया पीछे विजया हमारी रक्षा करें। बाएँ भाग में अजिता, दाहिने भाग में अपराजिता, शिखा में उद्योतिनी तथा मस्तक की उमा हमारी रक्षा करें।

ललाट में मालाधारी, दोनों भ्रूवों में यशस्विनी, भ्रूवों के मध्य में त्रिनेत्रा तथा नासिका में यमघण्टा हमारी रक्षा करें। दोनों नेत्रों के बीच में शङ्खिनी, दोनों कानों के मध्य में द्वारवासिनी, कपोलों की कालिका, कर्ण के मूल भाग में शांङ्करी हमारी रक्षा करें।

नासिका के बीच का भाग सुगंधा, ओष्ठ में चर्चिका, अधर में अमृत कला तथा जीभ में

सरस्वती हमारी रक्षा करें। कौमारी दाँतों की, चण्डिका कण्ठ-प्रदेश की, चित्रघण्टा गले की तथा महामाया तालु की रक्षा करें। कामाक्षी ठोढ़ी की, सर्वमंगला वाणी की, भद्रकाली ग्रीवा की तथा धनुष को धारण करने वाली रीढ़ प्रदेश (कमर) की रक्षा करें।

कण्ठ से बाहर नील ग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूवरी, दोनों कंधों की खड्गिनी तथा वज्र को धारण करने वाली दोनों बाहु की रक्षा करें। दोनों हाथों में दंड को धारण करने वाली अम्बिका अंगुलियों की रक्षा करें। शूलेश्वरी नखों की तथा कुलेश्वरी कुक्षि प्रदेश की रक्षा करें। महादेवी दोनों स्तनों की, शोक को दूर करने वाली मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में तथा शूलधारिणी उदर की रक्षा करें।

नाभि की कामिनी तथा गुह्य भाग की गुह्येश्वरी रक्षा करें। कामिका तथा पूतना लिंग की तथा महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करें। भगवती कटि प्रदेश तथा विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें। महाबला देवी दोनों पिंडलियों की रक्षा करें। नारसिंही दोनों पैर के घुट्टियों की, तेजसी देवी दोनों पैर के पिछले भाग की, श्री देवी पैर की उंगलियों की तथा तलवासिनी पैर के तलवों की रक्षा करें।

दंष्ट्राकराली नखों की, ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की, कावेरी रोमछिद्रों की, वागीश्वरी त्वचा की रक्षा करें। पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, माँस, हड्डी और मेदे की रक्षा करें। कालरात्रि आँतों की तथा मुकुटेश्वरी पित्त की रक्षा करें।

ब्रह्माणी शुक्र की, छत्रेश्वरी छाया की, धर्मधारिणी देवी अहंकार, मन तथा बुद्धि की रक्षा करें। अभेद्या जोड़ों की रक्षा करें। वज्रहस्ता देवी प्राण, अपान, व्यान, उदान तथा समान वायु की, कल्याण सोभना हमारे प्राणों की रक्षा करें। नारायणी देवी रस, रूप, गन्ध, शब्द तथा स्पर्श, सत्व, रज एवं तमोगुणों की रक्षा करें। वाराही आयु की, वैष्णवी धर्म की, चकिणी यश और कीर्ति की, लक्ष्मी धन और विद्या की रक्षा करें।

हे इंद्राणी! तुम मेरे कुल की, हे चण्डिके! तुम हमारे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की तथा भैरवी देवी पत्नी की रक्षा करें। सुपथा हमारे पथ की, क्षेमकरी मार्ग की रक्षा करें। राजद्वार पर महालक्ष्मी तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया भय से हमारी रक्षा करें।

हे देवी! इस कवच में जो स्थान छूट गया हो उसकी रक्षा आप स्वयं करें। यदि मनुष्य अपना

कल्याण चाहे तो वह कवच के पाठ के बिना एक पग भी नहीं चल सकता। कवच का पाठ करने वाला व्यक्ति अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है। उसे युद्ध में कोई नहीं हरा सकता। तीनों लोकों में उसकी पूजा होती है। यह देवी का कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

कवच का पाठ करने वाले व्यक्ति की असमय मृत्यु नहीं होती। वह सौ वर्ष से भी अधिक समय तक जीवित रहता है। इस कवच का पाठ करने से सिर में सिकरी, चेचक आदि रोग नष्ट हो जाते हैं। स्थावर विष, जंगम विष, कृत्रिम विष आदि नष्ट हो जाते हैं।

मारण, मोहन तथा उच्चाटन आदि किए गए अभिचार यंत्र, मंत्र, पृथ्वी तथा आकाश में विचरण करने वाले ग्राम देवता, जल में पैदा होने वाले क्षुद्र देवता आदि कवच के पाठ करने वाले मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं।

कवचधारी पुरुष को राजा के द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। कवच मनुष्य के तेज में वृद्धि करता है। उसकी कीर्ति इस संसार में प्रतिदिन बढ़ती रहती है। जो इस कवच का पाठ कर सप्तसती का पाठ करता है, उसकी पुत्र-पौत्रादि संतति चिरकाल तक विद्यमान रहती है। इस कवच का पाठ करने वाला सुंदर रूप को पाकर सदाशिव के साथ आनन्द पाता है।

श्री अर्गला स्तोत्र

मार्कण्डेय जी बोले–"ॐ जयंती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा नामों से प्रसिद्ध जगदम्बा आपको मेरा नमस्कार है। हे देवी चामुण्डे! तुम्हारी जय हो। सम्पूर्ण प्राणियों के दुःखों को हरने वाली देवी! तुम्हारी जय हो। सब में व्याप्त रहने वाली देवी! तुम्हारी जय हो। कालरात्रि! तुम्हें नमस्कार है। मधु कैटभ को मारने वाली, ब्रह्मा जी को वर देने वाली, आपको नमस्कार है। आप मुझे आत्मज्ञान दो, मोह पर विजय दो, यश दो, काम-क्रोध आदि का नाश करो। महिषासुर का नाश करने वाली, भक्तों को सुख देने वाली, आपको नमस्कार है। आप मुझे रूप (आत्मज्ञान) दो, जय (मोह पर विजय) दो, यश दो, काम-क्रोध आदि का नाश करो।

रक्तबीज का वध करने वाली और चण्ड-मुण्ड का नाश करने वाली देवी! मुझे रूप, जय यश दो और काम-क्रोध का नाश करो। शुम्भ और निशुम्भ तथा धूम्राक्ष का मान-मर्दन करने वाली देवी! आप मुझे रूप, जय, यश दो और काम-क्रोध का नाश करो। सब प्राणियों द्वारा वंदित युगल चरणों वाली तथा सबको सम्पूर्ण सौभाग्य प्रदान करने वाली देवी! आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध का नाश करो।

हे देवी! आपका रूप और चरित्र अचिन्त्य है। आप सब प्रकार के शत्रुओं का विनाश करने वाली हो। आप मुझे रूप, यश और जय प्रदान करो तथा काम-क्रोध का नाश करो। हे पापों को हरने वाली चण्डिके! जो भक्त आपके चरणों में मस्तक झुकाते हैं उन्हें रूप, जय, और यश प्रदान करो तथा काम क्रोध का नाश करो। हे व्याधियों का नाश करने वाली चण्डिके! जो भक्त आपकी स्तुति करते हैं उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध का नाश करो।

हे चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक आपकी निरंतर पूजा करते हैं उनको रूप, जय, यश प्रदान करो और काम-क्रोध का नाश करो। हे चण्डिके देवी! आप मुझे सौभाग्य और आरोग्य प्रदान करो, मुझे परम सुख प्रदान करो। मुझे रूप, जय और यश प्रदान करो। काम-क्रोध का नाश करो। हे भगवती! मुझसे द्वेष रखने वालों का नाश करो, मुझे बलवान बनाओ। मुझे रूप, यश और जय दो तथा काम-क्रोध का नाश करो।

हे देवी! हमारा कल्याण करो। हमें उत्तम सम्पत्ति दो, रूप दो, जय दो, यश दो और हमारे काम-क्रोध का नाश करो। हे अम्बिके! आपके चरणों में देवता और असुर दोनों ही अपने माथे के मुकुट की मणियों को घिसते रहते हैं। आप अपने भक्तों को रूप, यश और जय दो और काम क्रोध का नाश करो। हे देवी! अपने भक्तों को विद्यवान, यशवान, लक्ष्मीवान बनाओ। मुझे रूप दो, जय दो,

यश दो और काम-क्रोध का नाश करो।

हे चण्डिके! बड़े-बड़े दैत्यों का अभिमान चूर्ण करने वाली देवी! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप मुझे रूप, जय, यश दो और काम-क्रोध का नाश करो। चार मुखों वाले ब्रह्माजी द्वारा प्रशंसित चार भुजाएँ धारण करने वाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, यश दो, जय दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। हे देवी अम्बिके! भगवान विष्णु नित्य निरंतर भक्ति पूर्वक आपकी स्तुति करते रहते हैं। आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।

हे परमेश्वरी! हिमालय सुता पार्वती के स्वामी भगवान शंकर आपकी स्तुति करते रहते हैं। आप हमें रूप, जय, और यश प्रदान करो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। हे परमेश्वरी! इन्द्राणी के पति इन्द्र देव भी अपकी स्तुति करते रहते हैं। आप हमें रूप, जय और यश प्रदान करो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। हे देवी! आप प्रचण्ड भुज दण्ड रखने वाले दैत्यों का घमण्ड चूर्ण करने वाली हो। आप हमें रूप, जय, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का विनाश करो।

हे अम्बिके! आप अपने भक्तों को अपार आनन्द देने वाली देवी हो। हमें रूप, जय, यश प्रदान करो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो। हे देवी! मन की इच्छानुसार चलने वाली तथा

कठिन संसार सागर से पार लगाने वाली श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने वाली सुंदर स्वरूप वाली पत्नी दो।

जो पुरुष इस अर्गला स्तोत्र का पाठ करके महास्तोत्र (कीलक) का पाठ करता है, वह सप्तसती के पाठ जप से मिलने वाले वर एवं श्रेष्ठ सम्पदा के फल को प्राप्त कर लेता है।

श्री कीलक स्तोत्र

श्री जगदम्बा जी की प्रसन्नता हेतु नवरात्र व्रत में इस स्तोत्र का विनियोग है।

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है। मार्कण्डेय जी बोले–"ॐ, मैं उन भगवान शंकर जी को प्रणाम करता हूँ, जो त्रिनेत्र वाले हैं, जो मोक्ष प्रदान करने वाले हैं तथा जिनके मस्तक पर अर्द्ध चंद्रमा शोभायमान है। जो व्यक्ति इन कीलक मंत्रों को जानता है वही पुरुष कल्याण की प्राप्ति का अधिकारी है, जो अन्य मंत्रों के साथ सप्तशती स्तोत्र से देवी की स्तुति करता है, उसको इससे ही देवी की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। अपने कार्यों की सिद्धि हेतु दूसरे देवी-देवताओं की साधना करने की आवश्यकता नहीं रहती।

लोगों के मन में शंका थी कि केवल सप्तशती की उपासना से या सप्तशती को छोड़कर अन्य

मंत्रों की उपासना से भी समान रूप से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। क्या समस्त उच्चाटनादिक इसी से सिद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार की लोगों को शंका हुई तब उस शंका के निवारण के लिए भगवान भोलेनाथ ने सब लोगों को बुलाकर आज्ञा दी–''यह सब सिद्धियाँ देने वाला शुभ स्तोत्र है। इसके पश्चात भगवान भोलेनाथ ने चण्डिका के सप्तशती नामक स्तोत्र को गुप्त कर दिया। इस स्तोत्र के पाठ द्वारा प्राप्त होने वाला पुण्य कभी समाप्त नहीं होता। अतः इस कीलक मंत्र को पूरी तरह से जान लेना आवश्यक है। साधक सभी प्रकार का क्षेम प्राप्त कर लेता है, इसमें तनिक भी संशय नहीं है।

भगवती की सेवा में जो अपना सब कुछ समर्पित कर देता है और फिर उसे प्रसाद रूप से ग्रहण करता है, उस पर भगवती प्रसन्न हो जाती हैं। इस प्रकार सिद्धि के प्रतिबंधक रूप कीलक के द्वारा महादेव ने इसे कीलित कर रखा है। इसलिए इसका निष्कीलकन करके जो नित्य जपता है वह सिद्ध, गण या गंधर्व होता है। वह कहीं भी घूम रहा हो उसे कोई भय नहीं रहता, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती, मृत्यु उपरांत उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अतः कीलक को जानकर उसका परिहार करके सप्तशती का पाठ आरंभ करें। ऐसा न करने पर उसका नाश हो जाता है। कीलक और निष्कीलन का ज्ञान प्राप्त करने पर ही यह स्तोत्र निर्दोष होता है

और विद्वान पुरुष इस निर्दोष स्तोत्र का ही पाठ आरंभ करते हैं। स्त्रियों में जो कुछ सौभाग्य आदि दिखाई देता है वह सब इस पाठ की ही कृपा का फल है। इसलिए इस कल्याणकारी स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इस स्तोत्र का धीरे-धीरे पाठ करने से स्वल्प फल मिलता है। इसलिए उच्च स्वर से ही इसका पाठ करना चाहिए।

जिस देवी के प्रसाद से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रु का नाश तथा परम मोक्ष की प्राप्ति होती है, उस देवी की स्तुति अवश्य करनी चाहिए।

रात्रि सूक्त

महतत्त्वादि रूप व्यापक इंद्रियों से संसार की समस्त वस्तुओं को प्रकाशवान करने वाली ये रात्रिरूपा देवी अपने पैदा किए हुए जीवों के शुभाशुभ कर्मों को विशेष रूप से देखती रहती है तथा उनके अनुरूप फल की व्यवस्था करने हेतु समस्त विभूतियों को धारण करती है। यह देवी अमर हैं और समस्त संसार को, नीचे फैलने वाली लता आदि को तथा ऊपर की ओर बढ़ने वाले पेड़ों को भी व्याप्त करके स्थित हैं। इतना ही नहीं ये जीवों के अज्ञानान्धकार को अपनी ज्ञानमयी ज्योति से दूर कर देती हैं। शक्तिरूपा रात्रि देवी अपनी बहिन ब्रह्म विद्यामयी उषा देवी को प्रकट करती है। इस कारण

अविद्यामय रूपी अंधकार स्वयं नष्ट हो जाता है।

हे रात्रिदेवी! आप मुझ पर प्रसन्न हों, जिनके आने पर हम सब अपने घरों में सुखपूर्वक नींद का आनन्द लेते हैं–ठीक वैसे ही, जैसे रात्रि को सभी पक्षी पेड़ों पर बनाए हुए अपने घोंसलों में सुखपूर्वक निद्रा का आनन्द लेते हैं। इस करुणामयी रात्रि देवी की गोद में समस्त मनुष्य, पैरों से चलने वाले गाय, घोड़े, ऊँट, बैल आदि पशु, पक्षी एवं कीट-पतंगे आदि, किसी प्रयोजन से यात्रा करने वाले यात्री और बाज आदि भी सुखपूर्वक सोते हैं। हे रात्रिमयी शक्ति! तुम कृपा करके वासनामयी वृकी तथा पापमय वृक को हमसे अलग करो।

काम आदि तस्कर समुदाय को भी दूर भगाओ। हे रात्रि देवी! आप हमारे लिए मोक्षदायनी एवं कल्याणकारिणी बन जाओ। हे ऊषा! हे रात्रि की अधिष्ठात्री देवी! सब तरफ फैला हुआ अज्ञानमय काला अंधकार मेरे निकट आ गया है। आप इसे मुझसे दूर करो। जैसे धन देकर अपने भक्तों को ऋण से उऋण करती हो, उसी प्रकार ज्ञान का प्रकाश देकर मेरा अज्ञान रूपी अंधकार दूर करो। हे रात्रि देवी! आप दूध देने वाली गौ के समान हो। हे परम व्योम स्वरूप परमात्मा की पुत्री! तुम्हारी दया से मैं काम आदि शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सका हूँ। तुम स्तोम की भाँति मेरे हर्विय को ग्रहण करो।

दूसरा दिन

२. ब्रह्मचारिणी

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥

माँ दुर्गा की नौं शक्तियों में से दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी का है। यहाँ ''ब्रह्म'' शब्द का अर्थ तपस्या से है। ब्रह्मचारिणी का अर्थ हुआ तप की चारिणी-तप का आचरण करने वाली। ब्रह्मचारिणी देवी का स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यंत भव्य है। इनके बाएँ हाथ में कमण्डल और दाएँ हाथ में जप की माला रहती है।

माँ दुर्गा का यह दूसरा स्वरूप भक्तों और सिद्धों को अनंत फल प्रदान करने वाला है। इनकी उपासना से मनुष्य में तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम की वृद्धि होती है। दुर्गा पूजा के दूसरे दिन इन्हीं की उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन ''स्वाधिष्ठान'' चक्र में स्थित होता है। इस चक्र में अवस्थित मन वाला योगी उनकी कृपा और भक्ति प्राप्त करता है।

पहला अध्याय

भगवती की महिमा तथा मधु कैटभ वध

भगवान विष्णु के सो जाने के कारण मधु और कैटभ को मारने के लिए ब्रह्माजी ने जिनकी स्तुति की थी, उन देवी महाकाली की मैं स्तुति करता हूँ। वे अपने दसों हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, धनुष, बाण, परिध, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंख धारण करती हैं। वे त्रिनेत्रों वाली हैं। उन्होंने अपने समस्त अंगों में दिव्य आभूषण धारण कर रखे हैं।

मार्कण्डेय ऋषि बोले–"सूर्य के पुत्र सावर्णि जो आठवें मनु कहलाते हैं, उनके पैदा होने की कथा विस्तार पूर्वक सुनाता हूँ, हे ऋषियों! उसे ध्यान से सुनो–

प्राचीन काल में स्वारोचिष मन्वन्तर में चैत्र वंश में सुरथ नाम के एक राजा थे। उनका सारी पृथ्वी पर राज्य था। वे अपनी प्रजा का औरस पुत्रों की तरह पालन-पोषण करते थे। इतना होने पर भी कोला विध्वंसियों के राजा के साथ उनकी शत्रुता हो गई। उनका कोला विध्वंसियों के साथ युद्ध शुरू हो गया। यद्यपि कोला विध्वंसी संख्या में कम थे फिर भी उन्होंने सुरथ पर विजय प्राप्त कर ली। इसके बाद राजा सुरथ अपने नगर में आकर अपने देश का शासन करने लगे। परन्तु कोला विध्वंसियों

ने यहाँ भी राजा सुरथ पर आक्रमण कर दिया। राजा सुरथ का बुरा समय जानकर उसके दुरात्मा दुष्ट और बलवान मंत्रियों ने राजा की सेना, कोष आदि पर अपना अधिकार कर लिया।

अपना बुरा समय समझकर राजा सुरथ अकेला ही घोड़े पर बैठकर हिरण का शिकार खेलने के बहाने घने जंगल में चला गया। वहाँ पर उसे एक आश्रम दिखाई दिया। जहाँ पर जंगली पशु अपनी पारम्परिक हिंसावृत्ति को छोड़कर शान्तिपूर्वक विचरण कर रहे थे। वह आश्रम मेधा मुनि का था। आश्रम में पहुँचकर राजा सुरथ ने अपने आसन पर विराजमान महर्षि मेधा को दंडवत प्रणाम किया। मुनि द्वारा उचित सत्कार पाने के कारण राजा सुरथ कुछ काल तक वहाँ इधर-उधर विचरण करता हुआ आश्रम में रहने लगा।

कुछ काल तक आश्रम में रहने के बाद राजा सुरथ के मन को राज्य की ममता ने आकृष्ट कर लिया। वह सोचने लगा कि जिस प्रजा का पालन मैंने पुत्रवत किया था तथा मेरे पूर्वज जिसे पूर्व काल से पालते आए थे, आज वह राज्य मुझसे छिन गया है। मेरे ही नौकर-चाकर और मंत्री दुराचारी हो गए हैं। पता नहीं अब वे प्रजा का पालन धर्मपूर्वक करते होंगे या नहीं। मेरा श्रेष्ठ शूरवीर हाथी जो सदा मद की वर्षा करता रहता था, वह न जाने क्या-क्या कष्ट उठा रहा होगा। मेरे आज्ञाकारी नौकर-चाकर जो प्रतिदिन प्रसन्नता से धन और भोजन प्राप्त किया करते थे अब वे दूसरे राजा की आज्ञा का

पालन करते होंगे। मेरे कठिन परिश्रम से भरे-पूरे कोष को वे फिजूल खर्च करके खाली कर देंगे। क्या वास्तव में मेरे द्वारा संचित खज़ाना सचमुच नष्ट हो जाएगा ? इस प्रकार और भी बातें राजा के मन को व्यथित करने लगीं। इस प्रकार सोचते-सोचते एक दिन आश्रम के पास राजा सुरथ की भेंट एक वैश्य से हुई।

राजा ने उससे पूछा–"तुम कौन हो, यहाँ किसलिए आए हो ? तुम्हारा मुख मलिन और शोकग्रस्त दिखाई दे रहा है, इसका क्या कारण है ?" वैश्य ने उत्तर दिया–"मेरा नाम समाधि है। मेरा जन्म वैश्य जाति में हुआ है। धन के लोभ में पड़कर मेरे पुत्र व स्त्री ने मुझे घर से निकाल दिया है। अब मैं स्वजनों से रहित दु:खी होकर इन घने वन में घूम रहा हूँ। मेरे पीछे मेरे स्वजनों का क्या हाल होगा ? इसकी मुझे चिंता सता रही है। पता नहीं मेरे स्वजन किस अवस्था में रह रहे होगें। वे पवित्र जीवन बिता रहे होंगे या दुराचारी बन गए होंगे।"

राजा बोला–"तेरे पुत्र, स्त्री तथा बन्धु-बान्धवों ने लोभवश तेरा सब कुछ छीन लिया है फिर भी तेरा मन उनसे क्यों प्रेम करता है ?" वैश्य ने उत्तर दिया–"आपका कहना ठीक है किन्तु क्या करूँ, मेरा मन निष्ठुर नहीं हो पाता। उन्होंने धन के लोभ में पड़कर पिता का स्नेह, पति का प्रेम तथा आत्मीयजन के स्नेह को तिलांजली देकर मुझे घर से निकाल दिया। हे राजन! मेरा मन पता नहीं फिर

भी उन्हीं में क्यों आसक्त हो रहो रहा है? उनके लिए अब भी मैं लम्बी-लम्बी साँसें ले रहा हूँ। मेरा मन अत्यन्त दुःखी हो रहा है।''

मार्कण्डेय ऋषि बोले–''हे ब्राह्मण! इसके पश्चात् राजा सुरथ और वह वैश्य दोनों महर्षि मेधा के पास गए और दण्डवत प्रणाम करके राजा सुरथ महर्षि से बोले–''भगवन्! मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ, उसे बताइए। मेरा मन मेरे वश में नहीं है, यह बात मेरे मन को आन्दोलित कर रही है। मेरा राज्य मेरे हाथों से निकल गया है, फिर भी मेरी ममता राज्य के बारे में बनी हुई है। इधर इस वैश्य को भी पुत्र, स्त्री तथा सम्बन्धियों ने अपमानित करके घर से निकाल दिया है। यद्यपि इसे इसके सम्बन्धियों ने त्याग दिया है, फिर भी इसका मन उनमें ही रमा रहता है। इस प्रकार हम दोनों अत्यन्त दुःखी हैं। हे ऋषिवर! उन लोगों के अवगुणों को देखकर भी हम दोनों के मन में उनके लिए ममता उमड़ रही है। हमें इसका ज्ञान होते हुए भी ऐसा क्यों है? अज्ञानी मनुष्यों की तरह हम दोनों में यह मूढ़ता क्यों है?''

महर्षि मेधा बोले–''विषय मार्ग का ज्ञान सब जीवों को है। इसी प्रकार विषय भी सबके लिए अलग हैं। कुछ प्राणी दिन में नहीं देखते तो कुछ प्राणी रात में नहीं देखते। कुछ प्राणी दिन और रात में बराबर देखते हैं। यह ठीक है कि मनुष्य सब प्राणियों में समझदार है, किन्तु केवल वे ही ऐसे नहीं

होते। पशु-पक्षी भी ज्ञान रखते हैं। जैसा ज्ञान मनुष्यों में है वैसा ही ज्ञान पशु-पक्षियों में भी है। ज्ञान के होने पर भी इन पक्षियों को देखो, ये अपने बच्चों की चोंच में दाना डाला करते हैं। भूख से पीड़ित होने पर भी ये पहले बच्चों को खिलाते हैं। हे भद्र पुरुषों! क्या उन पुरुषों को नहीं देखते जो प्रत्युपकार के लोभ के कारण पुत्रों की प्राप्ति की कामना करते हैं।

लोभ के वशीभूत होकर उनका पालन-पोषण करते हैं। पुत्र-पौत्र उनका भरण पोषण न भी करें फिर भी माता-पिता तो अपने बच्चों का पालन-पोषण करते ही हैं। संसार में महामाया के प्रभाव से ममता रूपी भँवर से युक्त होकर मोह के भँवर में डाल दिए गए हैं। इसमें विस्मय करने की कोई बात नहीं है क्योंकि यह सब भगवान विष्णु की योग निद्रा है।

महामाया ने सारे विश्व को मोहित कर रखा है। वही देवी योग माया ज्ञानियों के चित्त भी बलपूर्वक खींचकर मोह में डाल देती है। उसी महामाया के द्वारा यह चराचर संसार उत्पन्न होता है। देवी महामाया प्रसन्न होकर अपने भक्तों को वरदान देती हैं जिससे मुक्ति प्राप्त होती है। वही मुक्ति की परम् हेतु हैं। वही सनातनी ब्रह्मज्ञान स्वरूप विद्या है। यह देवी ही सांसारिक बन्धनों का कारण हैं तथा वही सर्वेश्वर की ईश्वरी हैं।''

राजा सुरथ बोले–''हे महात्मा! आप जिसको महामाया कहते हैं वह कौन सी देवी हैं ? हे ब्राह्मण

श्रेष्ठ! यह देवी किस प्रकार उत्पन्न हुईं ? उसका क्या कार्य है ? उसका स्वभाव स्वरूप आदि के विषय में जानना चाहता हूँ।'

ऋषि बोले–"हे राजन्! वह देवी तो नित्य स्वरूपा हैं। उसके द्वारा यह संसार रचा गया है फिर भी उसकी उत्पत्ति अनेक प्रकार से होती है। वह सब मैं आपको बताता हूँ। वह देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए प्रकट होती हैं।

एक बार संसार को जलमग्न करके जब भगवान विष्णु योग निद्रा का आश्रय लेकर, शेष शय्या पर सो रहे थे, तब मधु-कैटभ नाम के दो प्रसिद्ध राक्षस उनके कानों के मैल से प्रकट हुए और ब्रह्माजी को मारने दौड़े। ब्रह्माजी विष्णु जी की नाभि कमल में जा छिपे।

ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु को सोया हुआ देखकर हृदय को एकाग्र करके इसी योग निद्रा की स्तुति की। यह स्तुति भगवान विष्णु को जगाने हेतु की गई थी। उस समय भगवान विष्णु के नेत्रों में योग निद्रा देवी ने निवास कर रखा था। योग निद्रा देवी भगवान विष्णु की अतुल तेज वाली अनुपम शक्ति हैं। ब्रह्माजी बोले–"हे महामाया! तुम ही स्वाहा हो, तुम ही स्वधा हो, तुम ही वषट्कार स्वर हो। हे देवी! तुम ही अमृत हो, नित्य ओंकार स्वरूप अक्षर ब्रह्म में अ, उ, म इन तीन मात्राओं में तुम ही स्थित हो तथा इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त नित्य आधी मात्रा (व्यंजन) जिसका उच्चारण

विशेष रूप से नहीं हो सकता, वह भी तुम ही हो। हे देवी! तुम ही संध्या हो, तुम ही सावित्री हो और हे देवी! तुम ही संसार की जननी अर्थात् संसार की रचना करने वाली माता हो। संसार का पालन भी तुम ही करती हो। अन्त में इसका संहार भी तुम ही करती हो। हे मातेश्वरी! सृष्टि को रचते समय तुम सृष्टि रूपा हो, पालते समय तुम स्थिति रूपा हो।

कल्पान्त में जब इस संसार का प्रलय करती हो तो संहृति रूपा भी तुम ही हो। तुम ही महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महारात्रि हो। हे मातेश्वरी! तुम ही समस्त चराचर के तीनों गुण (सत्व, रज और तम) की उत्पन्न कर्त्ता प्रकृति स्वरूप हो। हे देवी! तुम ही कालरात्रि, महारात्रि तथा दारुण मोहरात्रि हो। श्री भी तुम ही हो, ईश्वरी भी तुम ही हो, लक्ष्ण बुद्धि भी तुम ही हो।

हे देवी! तुम ही लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति एवं क्षमा हो। खग-धारिणी, त्रिशूल-धारिणी, घोर-रूपा, गदा तथा चक्र धारण करने वाली तुम ही हो। हे देवी! शंख, धनुष-बाण, भुशुण्डी और परिध धारण करने वाली तुम ही हो। तुम ही सौम्य एवं सौम्यन्तर हो। सभी सुन्दर पदार्थों से भी तुष अत्यन्त सुन्दरी हो। हे देवी! पर और अपर में श्रेष्ठ तुम ही हो और तुम ही परमेश्वरी हो। हे सभी स्वरूपों को धारण करने वाली जहाँ कहीं सत्य और असत्य वस्तुएँ हैं, उन सब में जो शक्ति है, वह तुम ही हो।

हे देवी! उन समस्त वस्तुओं की शक्ति तुम ही हो। मैं आपकी किस तरह से प्रार्थना करूँ जो इस संसार की रचना, पालन और संहारकर्त्ता है। ऐसी अवस्था में तुम्हारी स्तुति कौन कर सकता है? इस जगत की सृष्टि, पालन और संहार करने वाले विष्णु भगवान को जब तुमने निद्रा के वशीभूत कर दिया है तो फिर तुम्हारी स्तुति कौन कर सकता है? हे देवी! मुझे भगवान विष्णु को एवं भगवान महादेव को भी तुमने शरीर प्रदान किया है। इसी कारण आपकी स्तुति करने की शक्ति किस में हो सकती है? हे देवी! तुम अपने उदार प्रभावों के द्वारा ही स्वयं प्रशंसित हो।

हे देवी! ये मधु और कैटभ दोनों दुर्धर्ष राक्षस हैं। इन्हें मोहित करके तथा संसार के पालक भगवान विष्णु को शीघ्र ही जगा दो। इसके साथ-साथ विष्णुजी के हृदय में इन दोनों को मार डालने की बुद्धि पैदा करो।

ऋषि बोले! इस तरह जब ब्रह्माजी ने मधु और कैटभ असुरों के संहार के लिए तथा भगवान विष्णु को जगाने के लिए देवी से प्रार्थना की तो उसी समय भगवान विष्णु के नयन, मुख, नाक, भुजा, हृदय और वक्ष-स्थल से निकलकर अव्यक्त जन्मा श्री ब्रह्माजी के आगे योगमाया उपस्थित हो गईं तथा भगवान विष्णु भी उस भोग निद्रा से जाग गए।

भगवान विष्णु ने उन दोनों राक्षसों को देखा जो क्रोध से लाल आँखे किए ब्रह्माजी को खा जाने का प्रयत्न कर रहे थे। उसी समय भगवान विष्णु ने शेष शय्या से उठकर उन दोनों राक्षसों से युद्ध किया। उन्होंने उन दोनों राक्षसों से पाँच हज़ार वर्ष तक केवल बाहु युद्ध किया। वे दोनों राक्षस मधु और कैटभ अत्यन्त बल के कारण उन्मत्त हो रहे थे। इधर महामाया ने भी उन्हें मोह में डाल रखा था। वे दोनों राक्षस श्री हरि से कहने लगे, हम तुम्हारी वीरता से संतुष्ट हैं। तुम हमसे कोई भी वर माँग लो। श्री हरि बोले! यदि तुम दोनों मुझसे प्रसन्न हो तो अब मेरे हाथों से मारे जाओ।

बस इतना सा ही मैं तुमसे वर माँगता हूँ। यहाँ दूसरे किसी वर से क्या लेना है। ऋषि ने कहा! इस प्रकार धोखे में आ जाने पर जब भगवान श्री हरि ने उन दोनों से यह वरदान ले लिया तो वे दोनों राक्षस श्री हरि से कहने लगे कि हमें सब जगह जल ही जल दिखाई देता है, इसलिए हमार वध उस स्थान पर कीजिए जहाँ पृथ्वी पर पानी न हो।

ऋषि मेधा ने कहा–"तथास्तु, ऐसा ही होगा, कहकर शंख, चक्र, गदाधारी भगवान ने उन दोनों के सिर अपनी जँघाओं पर रखकर चक्र से काट डाले। इस प्रकार यह महामाया देवी श्री ब्रह्माजी की प्रार्थना पर स्वयं उत्पन्न हुई हैं। हे राजन! मैं अब इसके प्रभाव को बताता हूँ, आप ध्यान से सुनो।"

दूसरा अध्याय

देवीजी का प्रादुर्भाव व महिषासुर की सेना का वध

ऋषि बोले! प्राचीन काल में देवताओं और राक्षसों में सौ वर्ष तक युद्ध चलता रहा। उस समय राक्षसों के स्वामी महिषासुर और देवताओं के स्वामी इन्द्र थे। इस युद्ध में देवताओं की सेना महाबली राक्षसों से पराजित हो गई। सब देवताओं पर विजय प्राप्त कर महिषासुर स्वयं इन्द्र बन बैठा। पराजित होने पर देवता ब्रह्माजी के नेतृत्व में भगवान विष्णु और भगवान शंकर की शरण में गए। उन्होंने उनको अपनी पराजय तथा महिषासुर के बल और प्रताप का सम्पूर्ण विवरण सुनाया।

महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण तथा अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए हैं। वह स्वयं ही सबका अधिपति बन गया है। उसने सभी देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया है। महिषासुर महान दुरात्मा है। सभी देवता पृथ्वी पर मनुष्यों की भाँति विचरते हैं। अब हम आपकी शरण में आए हैं। उसके वध का आप कोई उपाय कीजिए।

देवताओं की दीन वाणी सुनकर भगवान विष्णु और भगवान शिव अत्याधिक क्रोध में भर गए, उनकी भ्रकुटी तन गईं और आँखे लाल हो गईं। उसी समय ब्रह्मा, विष्णु और शिव के मुँह से पूर्ण क्रोध के कारण एक महान तेज प्रकट हुआ। इसी प्रकार अन्य सभी देवताओं के शरीर से भी बड़ा भारी तेज निकला। वह सब तेज मिलकर एकाकार हो गया।

महान तेज का एक पुँज जाज्वलयमान पर्वत सा जान पड़ा। देवताओं ने देखा:, उसकी ज्वालाएँ सम्पूर्ण दिशाओं में व्याप्त हो रही हैं। वह तेज पुँज सभी देवताओं के शरीर से प्रकट होने के कारण उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती थी। एकत्र होने पर वह पूँज एक नारी के रूप में परिणित हो गया और उसके प्रकाश से तीनों लोक भर गए।

भगवान शंकर के तेज से उस देवी का मुख प्रकट हुआ। यमराज के तेज से देवी के बाल प्रकट हुए तथा विष्णु भगवान के तेज से देवी की भुजाएँ प्रकट हुईं। चन्द्रमा के तेज से देवी के दोनों स्तन, इन्द्र के तेज से उसका कटि प्रदेश, वरुण के तेज से देवी की जंघा एवं उरु स्थल, पृथ्वी के तेज से नितम्बों का निर्माण हुआ। ब्रह्माजी के तेज से देवी के दोनों चरण, सूर्य के तेज से चरणों की उंगलियाँ, वसुओं के तेज से हाथों की उंगलियों का, कुबेर के तेज से नासिका का निर्माण हुआ। प्रजापति के तेज से दाँतों का, अग्नि के तेज से तीन नेत्रों का निर्माण हुआ। संध्याओं के तेज से दोनों

भौंहों का, वायु के तेज से दोनों कानों का निर्माण हुआ। इसी प्रकार दूसरे देवताओं के तेज से कल्याणकारी देवी का प्रादुर्भाव हुआ।

समस्त देवताओं के तेज पुँज से प्रकट हुई देवी को देखकर महिषासुर से पीड़ित सभी देवताओं की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। भगवान शिव ने अपने त्रिशूलों में से एक त्रिशूल देवी को दिया। भगवान विष्णु ने अपने चक्र में से एक चक्र देवी को प्रदान किया। वरुण ने शंख, अग्नि ने शक्ति, पवन ने धनुष और बाणों से भरा तरकश देवी को प्रदान किया। इसी प्रकार इन्द्र ने अपने वज्र में से एक वज्र और एरावत हाथी से उतारकर एक घंटा देवी को प्रदान किया। यमराज ने कालदण्ड से दण्ड, वरुण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिक की माला तथा ब्रह्माजी ने कमण्डल से कमण्डल प्रदान किया।

सूर्य भगवान ने देवी के समस्त रोम-कूपों में अपनी किरणों का तेज भर दिया। काल ने उन्हें चमकती हुई ढाल और तलवार प्रदान की। क्षीर सागर ने उन्हें उज्जवल हार तथा कभी जीर्ण न होने वाले दो दिव्य वस्त्र भेंट किए। साथ ही उन्हें दिव्य चूड़ामणि, कानों के लिए दो दिव्य कुंडल तथा कड़े प्रदान किए। इसके साथ ही उन्हें उज्जवल अर्धचन्द्र, बाँहों के लिए बाजू बन्द, चरणों के लिए नुपूर, गले के लिए सुन्दर हँसली प्रदान की। उँगलियों के लिए रत्न जड़ित अँगूठियाँ भी प्रदान कीं।

विश्वकर्मा नें उन्हें फरसा और कई प्रकार के अस्त्र और अभेद्य कवच प्रदान किए। इसके अतिरिक्त कभी न मुरझाने वाले कमल के फूलों की मालाएँ भी भेंट कीं। समुद्र ने उन्हें सुन्दर कमल के पुष्प भेंट किए। हिमालय ने सवारी के लिए उन्हें सिंह और तरह-तरह के रत्न भेंट किए। यक्षराज कुबेर ने उन्हें मधु से भरा हुआ पात्र तथा शेष नाग ने बहुमूल्य मणियों से विभूषित नाग हार भेंट किया। इसी प्रकार अन्य सभी देवताओं ने भी अनेक प्रकार के आभूषण और आयुद्ध भेंट किए।

इस प्रकार सम्मानित होने पर देवी ने उच्च स्वर से गर्जना की। उनके इस भयंकर नाद से समस्त भूमण्डल और आकाश गूँज उठा। देवी के अट्टहास से पृथ्वी काँपने लगी। यह घोर गर्जना कहीं समा न सकी। समस्त लोक क्षुभित हो गए। समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगीं। पृथ्वी हिलने लगी। सभी देवता प्रसन्न होकर सिंहवाहिनी देवी की जय-जयकार करने लगे। ऋषि-मुनि भी भगवती देवी की नम्रतापूर्वक प्रार्थना करने लगे। इस प्रकार देवी भगवती ने सारे विश्व को भयमुक्त कर दिया।

असुर सेना भी हथियारों सहित लड़ने को तैयार हो गईं। महिषासुर क्रोधित होकर बोला–"यह क्या हो रहा है ? महिषासुर सेना के साथ उस तरफ दौड़ा जहाँ पर देवी भगवती अट्टहास कर रही थीं। उसी समय उसने तीनों लोकों में व्याप्त भगवती को देखा। महिषासुर देखता है कि विश्व व्यापनी देवी भगवती अपने चरणों के बोझ से पृथ्वी को रसातल में दबा रही हैं और अपने मुकुट से आकाश को

छू रही हैं। उनके धनुष की टंकार से सारा पाताल लोक कम्पायमान हो रहा है।

महिषासुर ने देखा कि देवी भगवती ने अपनी सहस्रों भुजाएँ सब दिशाओं में फैला रखी हैं। देवी का राक्षसों के साथ युद्ध प्रारम्भ हो गया। अनेकों प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रों से सबकी सब दिशाएँ उद्भाषित होने लगीं। महिषासुर की सेना का सेनापति चिक्षुर आगे बढ़कर देवी के साथ युद्ध करने लगा। दूसरे राक्षसों की चतुरंगिणी सेना लेकर चामर भी लड़ने लगा। उदग्र नामक महादैत्य भी साठ हज़ार महारथियों को लेकर युद्ध में कूद पड़ा।

महाहनु नामक दैत्य एक करोड़ रथियों को लेकर और असिलोमा नामक असुर पाँच करोड़ सैनिकों को लेकर युद्ध करने लगा। वाष्कल नामक राक्षस साठ लाख सैनिकों के साथ युद्ध क्षेत्र में कूद पड़ा। वृत नामक राक्षस भी एक करोड़ रथी सेना लेकर युद्ध के मैदान में कूद पड़ा। विडालक्ष नामक राक्षस भी डेढ़ करोड़ सेना लेकर भगवती से युद्ध करने लगा। अन्य राक्षस भी अपनी सेना, रथ, घोड़े, हाथी लेकर देवी भगवती से युद्ध करने लगे। राक्षसी सेना तोमर भिन्दीपाल, शक्ति, मूसल, परशु, पट्टिश, खड्ग आदि शस्त्रों से लैस भगवती के साथ युद्ध करने लगी। कुछ राक्षसों ने देवी पर शक्तियाँ और पाश फेंके।

देवी भगवती ने राक्षसों द्वारा अपने ऊपर फेंके गए अस्त्र-शस्त्रों को इस प्रकार काट डाला कि मानो कोई गाजर-मूली काट रहा हो। चंडी देवी के तेज को देखकर देवता और ऋषि उनकी स्तुति करने लगे। इससे देवी उत्साहित होकर अपने शस्त्रों द्वारा राक्षस सेना को निशाना बनाने लगीं। उनका वाहन शेर भी क्रोधित होकर गर्दन के बालों को हिलाने लगा तथा दहाड़ने लगा। वह राक्षसों की सेना में इस प्रकार घूमने लगा मानों वन में आग लग गई हो। देवी क्रोध में भरकर नथूने फुलाकर श्वांस छोड़ने लगीं।

उनकी प्रत्येक श्वांस से सैकड़ों हज़ारों गण पैदा हो गए। उन गणों ने खग, भिन्दीपाल, परशु, पट्टिश आदि से युद्ध करना शुरू कर दिया। वे देवी के गण राक्षसों का नाश करने लगे, कुछ गण नगाड़े, शंख आदि बजाने लगे। कुछ गण मृदंग बजाने लगे। तब देवी भगवती ने त्रिशूल, गदा तथा शक्तियों से आक्रमण कर दिया। रण चंडिका देवी ने तलवारों से सैकड़ों असुरों को मौत के घाट उतार दिया। कुछ राक्षस देवी के घण्टे की आवाज़ से मोहित हो गए। बहुत से राक्षसों को देवी ने अपने पाश में बाँधकर पृथ्वी पर घसीट कर मार डाला।

देवी भगवती ने बहुत से राक्षसों को अपनी गदा और मूसल की मार से घायल कर दिया। कितने

ही राक्षसों के हृदय शूल से फट गए। कितने ही राक्षसों को बाणों की वर्षा कर देवी ने मौत के घाट उतार दिया। कितने ही राक्षसों की भुजाएँ कट गईं। अनेकों राक्षसों की गर्दनें शरीर से अलग हो गईं।

देवी ने कुछ राक्षसों के शरीर के दो टुकड़े कर दिए। कुछ राक्षस जंघा कट जाने से धराशायी हो गए। कुछ दैत्यों की एक भुजा, एक आँख और एक टाँग काटकर देवी ने उन्हे दो हिस्सों में बाँट दिया। अनेकों राक्षसों के मस्तक कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे।

राक्षसों के सिर विहीन धड़ हाथों में तलवार, शक्तियाँ और ऋष्टि आदि शस्त्र लेकर घूम रहे थे। कुछ असुर देवी को ठहर जा, ठहर जा कहकर पुकार रहे थे। युद्ध का मैदान रथी, हाथी, घोड़े एवं राक्षसों की लाशों से पटा पड़ा था। वहाँ पर आना जाना कठिन था। युद्ध के मैदान में इतना रक्त बह रहा था कि मानो रक्त की नदी बह रही हो।

देवी चण्डी ने असुर सेना का इस प्रकार संहार कर दिया मानो तिनके और लकड़ी के ढेर में आग लगी दी हो। चण्डी के गणों ने उन राक्षसों के साथ ऐसा युद्ध किया कि देवता प्रसन्न होकर आकाश से फूलों की वर्षा करने लगे। देवी का वाहन सिंह भी भयंकर आवाज़ करता हुआ तथा अपने बालों को हिलाता हुआ घूम रहा था।

तीसरा दिन

३. चन्द्रघण्टा

पिण्डज प्रवरारूढ़ा चण्डकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

माँ दुर्गा की तीसरी शक्ति का नाम "चन्द्रघण्टा" है। नवरात्र उपासना में तीसरे दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन आराधना की जाती है। इनका स्वरूप परम शांतिदायक और कल्याणकारी है। इनके मस्तक में घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र है। इसी कारण इस देवी का नाम चन्द्रघण्टा पड़ा। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। इनका वाहन सिंह है।

हमें चाहिए कि हम मन, वचन, कर्म एवं शरीर से शुद्ध होकर विधि-विधान के अनुसार माँ चन्द्रघण्टा की शरण लेकर उनकी उपासना, आराधना में तत्पर हों। इनकी उपासना से हम समस्त सांसारिक कष्टों से छूटकर सहज ही परमपद के अधिकारी बन सकते हैं।

तीसरा अध्याय

महिषासुर का वध

महिषासुर के प्रधान सेनापति चिक्षुर ने जब देखा कि हमारी सेना का संहार हो रहा है तो वह क्रोध से भर गया और स्वयं भी अम्बिका साथ युद्ध करने के लिए चल पड़ा। उसने युद्ध के मैदान में जाकर देवी पर बाणों की ऐसी वर्षा की जैसे बादल मेरु पहाड़ के शिखर पर पानी की धारा बरसा रहे हों। इस पर देवी ने अपने बाणों से चिक्षुर के बाणों को काटकर उसके सारथी एवं घोड़ों को मार डाला। इसके बाद देवी ने चिक्षुर के धनुष तथा ध्वजा को भी काट दिया। चिक्षुर के धनुष के कट जाने पर देवी ने उसके अंगों को भी अपने बाणों से बींध दिया।

धनुष, रथ, घोड़ा और सारथी के नष्ट हो जाने पर चिक्षुर अपने हाथ में ढाल एवं तलवार लेकर भगवती देवी का वध करने के लिए आगे बढ़ा। उसने तलवार से सिंह के मस्तक पर प्रहार करके बड़े वेग से उसने देवी की बाईं भुजा पर वार किया। वह तलवार जब देवी की भुजा पर पड़ी तो वह टूट गई। इस पर क्रोध से लाल नेत्र करके चिक्षुर ने अपने त्रिशूल से देवी पर वार किया। त्रिशूल आकाश

मार्ग से गिरता हुआ सूर्य के समान प्रकाशमान दिखाई पड़ा। त्रिशूल को अपनी ओर आते देख देवी ने अपने त्रिशूल से चिक्षुर के त्रिशूल के सौ टुकड़े कर दिए और इसके साथ ही देवी के त्रिशूल ने चिक्षुर के प्राण भी हर लिए। इस प्रकार देवी ने चिक्षुर का अन्त कर दिया।

चिक्षुर के मरने पर देवताओं का शत्रु चामर दैत्य हाथी पर बैठकर देवी भगवती से युद्ध करने आया। उसने आते ही देवी पर शक्ति का प्रहार किया। इस पर देवी ने अपनी हुँकार से शक्ति को निष्प्रभावी बना दिया। शक्ति को निष्प्रभावी होते देखकर चामर ने अत्यन्त क्रोधित होकर अपना त्रिशूल देवी भगवती पर फेंका। देवी ने उस त्रिशूल के अपने बाण से टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इसके बाद देवी का वाहन सिंह उछलकर हाथी पर बैठ गया और चामर से मलयुद्ध करने लगा। सिंह ने चामर को हाथी पर से नीचे ज़मीन पर गिरा दिया। सिंह बड़े वेग से आकाश की ओर उछला और जब वह पृथ्वी पर वापिस आया तो अपने पंजों से चामर का सिर धड़ से अलग कर दिया।

क्रोधित देवी ने शिला और वृक्ष आदि की चोटों से उदग्र नामक राक्षस को मार डाला। उसके बाद कराल नामक राक्षस को अपने दाँतो, मुक्कों और थप्पड़ों से मार डाला। अब देवी ने गदा के

प्रहार से उद्धत नामक दैत्य को भी मार डाला। इसके बाद वाष्पाल नामक राक्षस का भिन्दीपाल से अन्त कर दिया। बाणों से ताम्र और अन्धक नामक राक्षसों को मौत के घाट उतार दिया। त्रिनेत्रों वाली देवी दुर्गा ने उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु नाम के राक्षसों को त्रिशूल से मार गिराया। तलवार से बिडाल नामक राक्षस का सिर धड़ से अलग कर दिया। दुर्धर और दुर्मुख राक्षसों को अपने बाणों द्वारा यमलोक पहुँचा दिया।

इस प्रकार जब महिषासुर ने देखा कि देवी ने मेरी सेना को यमलोक पहुँचा दिया है तो वह भैंसे का रूप धारण कर देवी के गणों को दुख पहुँचाने लगा। कुछ गणों को मुँह के प्रहार से, कुछ गणों को खुरों से, कुछ गणों को पूँछ घुमाकर तथा कुछ गणों को सींगो के प्रहार से चोट पहुँचाने लगा। किसी तेज़ दौड़ाकर, किसी को गर्जना करके, किसी को भ्रमण और श्वांस की वायु से पृथ्वी पर पटकने लगा। इसके बाद वह देवी के वाहन सिंह को मारने दौड़ा तो देवी को उस पर क्रोध आ गया। इस पर भैंस बना महिषासुर क्रोधित होकर अपने खुरों से धरती को खोदने लगा तथा ऊँचे पहाड़ों से सींगो से पत्थर फेंकने लगा और गरजने लगा।

महिषासर के वेग से दौड़ने के कारण पृथ्वी हिलने लगी। पूँछ की फटकार से समुद्र का जल उछल-उछल कर चारों ओर पृथ्वी पर फैलने लगा। सींगों के आघात से मेघ खण्ड-खण्ड हो गए और उसकी श्वांस से वायु से उड़ते हुए सैंकड़ों पर्वत आकाश से पृथ्वी पर गिरने लगे।

इस पर देवी ने पाश फेंककर दैत्य को बाँध लिया। दैत्य ने बँध जाने पर भैंसे का रूप त्याग दिया। अब महिषासुर ने सिंह का रूप धारण कर लिया और जैसे ही देवी उसका सिर काटने को हुईं तो दैत्य ने आदमी का रूप बना लिया जो हाथ में तलवार लिए था। देवी ने फौरन अपने बाणों से उस मायावी राक्षस को उसी तलवार ढाल सहित बींध डाला। अब वह हाथी बन गया। अपनी सूँड से वह देवी के वाहन सिंह को खींचने लगा। इस पर देवी ने अपनी तलवार से उसकी सूँड काट डाली। अब महिषासुर ने एक बार फिर भैंसे का रूप धारण कर लिया। पहले की तरह वह चर-अचर जीवों सहित समस्त त्रिलोकी को व्याकुल करने लगा।

अब क्रोध में भरकर देवी बारम्बार उत्तम मधु का सेवन करने लगीं और लाल-लाल नेत्र करके अट्टहास करने लगीं। उधर बल, वीर्य तथा मद से क्रुद्ध हुआ, दैत्य भी गरजने लगा। उसने देवी पर

अपने सींगों से पर्वत फेंकने शुरू कर दिए। देवी दुर्गा ने अपने बाणों से उन पहाड़ों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। मधु पान के कारण लाल मुख वाली देवी लड़खड़ाते वचनों से बोलीं अरे मूर्ख! जब तक मैं मधुपान का सेवन कर रही हूँ तब तक तू गर्जना कर ले। मैं अभी तुझे यहीं मारूँगी। तब देवता यहाँ गर्जना करेंगे।

इतना कहकर देवी दुर्गा उछलकर उस दैत्य पर जा चढ़ीं और उसको अपने पैर से दबाकर शूल से उसके गले पर आघात किया। देवी के पैर से दबने पर दैत्य अपने दूसरे रूप से अपने मुख से बाहर होने लगा। अभी वह आधा ही बाहर निकला था कि देवी ने अपने प्रभाव से उसे रोक दिया। अब वह आधा निकला हुआ ही राक्षस युद्ध करने लगा तो देवी ने तलवार से उसका सिर काट दिया। इस प्रकार राक्षस महिषासुर का अन्त हो गया। महिषासुर के मारे जाने पर दैत्य सेना हा-हा कार करने लगी, तब उस सारी सेना का भी देवी ने नाश कर दिया।

इस पर सब देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए। ऋषियो-महर्षियों सहित समस्त देवता देवी की स्तुति करने लगे। गन्धर्व राज गान करने लगे तथा अप्सराएँ नृत्य करने लगीं॥ ॐ॥

चौथा अध्याय

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

ॐ ऋषि बोले! देवी ने जब पराक्रमी दुरात्मा महिषासुर का वध कर दिया और राक्षसों की सेना को मार दिया तो इन्द्रादि समस्त देवता अपना सिर और शरीर झुकाकर भगवती दुर्गा की स्तुति करने लगे।

जिस देवी ने अपनी शक्ति से यह जगत व्याप्त कर रखा है और जो समस्त देवताओं तथा महर्षियों की पूजनीय हैं। उस अम्बिका को हम भक्तिपूर्वक वन्दना करते हैं। वह हम सबका कल्याण करें।

जिस अतुल बल और प्रभाव का वर्णन भगवान विष्णु, भगवान शंकर और ब्रह्माजी भी नहीं कर सके, वही चण्डिका देवी इस सम्पूर्ण संसार का पालन करें और अशुभ भय का विनाश करें।

पुण्यात्माओं के घरों में आप स्वयं लक्ष्मी का रूप हो और पापियों के घरों में तुम अलक्ष्मी रूप हो और सत्कुल में जन्म लेने वालों के लिए तुम लज्जा रूप होकर उनके घरों में निवास करती हो। हम उस दुर्गा भगवती को नमस्कार करते हैं। हे देवी! इस संसार का पालन करें।

हे मातेश्वरी! आपके इस अचिन्त्य रूप का असुरों का संहार करने वाली शक्ति तथा युद्ध में असुरों के साथ आपके अनेक प्रकार के चरित्रों को हम किस भाँति वर्णन कर सकते हैं अर्थात् आपकी महिमा का वर्णन शब्दों से बाहर की बात है।

आप सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति का कारण हैं। आप में सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण में तीनों उपस्थित हैं, तो भी दोषों के साथ आपका संसर्ग नहीं बन पड़ता। भगवान विष्णु और महादेव आदि देवता भी आपका पार पाने में असमर्थ हैं। आप ही सबकी आश्रय हैं। यह समस्त जगत आपका अंश भूत हैं, क्योंकि आप सबकी आदि भूत अव्याकृता परा प्रकृति हैं।

हे देवी! सम्पूर्ण यज्ञों में जिसके उच्चारण में सब देवता तृप्त होते हैं, वह स्वाहा आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आप पितरों की भी तृप्ति का कारण हैं, इसलिए सब लोग आपको स्वधा कहते हैं।

हे देवी! वह विद्या जो मोक्ष को देने वाली है, जो अचिन्त्य, महज्ञान, स्वरूपा है, मोक्ष की इच्छा वाले, मुनिजन जिसका अभ्यास करते हैं, वह तुम ही हो।

हे देवी! तुम वाणी रूप हो, दोष रहित हो, ऋगवेद तथा यजुर्वेद की एवं उदगीत और सुन्दर पदों के पाठ वाले सामवेद की आश्रय रूप हो, तुम भगवती, दुर्गा हो। इस संसार की उत्पत्ति एवं पालन के

लिए तुम वार्ता के रूप में प्रकट हुई हो और तुम सम्पूर्ण विश्व की पीड़ा हरने वाली हो।

हे देवी! जिससे समस्त शास्त्रों को जाना जाता है। वह मेधाशक्ति तुम ही हो और दुर्गम भवसागर से पार करने वाली नौका भी तुम ही हो। लक्ष्मी रूप से विष्णु भगवान के हृदय में निवास करने वाली और भगवान महादेव द्वारा सम्मानित गौरी देवी तुम ही हो।

हे देवी! मन्द-मुस्कान वाले, निर्मल पूर्ण चन्द्र बिम्ब के समान और उत्तम सुवर्ण की मनोहारी कान्ति से कमनीय तुम्हारे मुख को देखकर भी महिषासुर क्रोध में भर गया, यह बड़े आश्चर्य की बात है।

हे देवी! तुम्हारा यही मुख जब क्रोध से भर गया तो उदय काल के चन्द्रमा की तरह लाल हो गया और तनी हुई भौंहों के कारण आपका विकराल रूप हो गया, उसे देखकर भी महिषासुर के शीघ्र प्राण क्यों नहीं निकल गए। यह बड़े आश्चर्य की बात है।

हे देवी! तुम हमारे कल्याण के लिए प्रसन्न होती हो। आपके प्रसन्न होने से इस विश्व का अभ्युदय होता है और जब आप क्रुद्ध हो जाती हैं तो कितने ही कुलों का सर्वनाश हो जाता है। यह हमें अभी-अभी ज्ञात हुआ है, जब तुमने महिषासुर की विशाल सेना को देखते ही देखते मार गिराया।

हे देवी! आप उन्नति को देने वाली हैं। आप जिस पर प्रसन्न होती हैं, वे सभी जगह मान-सम्मान पाते हैं, उन्हें ही धन और यश मिलता है। वे अपने धर्म का भी पालन करते हैं, वे ही रक्षित रहते हैं, वे अपनी पत्नी, अपने बच्चों तथा सम्बन्धियों के साथ प्रसन्न रहते हैं।

हे देवी! आपकी कृपा से ही अत्यन्त आदृत पुण्यात्मा पुरुष अपने धर्म सम्बन्धी कार्य प्रतिदिन निष्पादित करते हैं। आपकी कृपा से ही उन्हें स्वर्ग लाभ मिलता है। इसी कारण आप तीनों लोकों में फल देने वाली मानी जाती हैं।

हे देवी दुर्गे! आपका स्मरण करने पर आप प्राणियों के भय हरण करने वाली हो। स्वस्थ पुरुष जब आपका स्मरण करते हैं, तो आप उन्हें अत्यन्त पवित्र बुद्धि प्रदान करती हैं। दरिद्रता, दुख और भय हरने वाली हे देवी! आपसे बढ़कर और कौन इस संसार में है? आप ही सबका उपकार करने वाली तथा सर्वदा दयामयी हो।

हे देवी! उन असुरों का विनाश करने से संसार में सुख और शांति हो और ये राक्षस नरक में रहने के निमित्त भले ही पाप करते हों परन्तु युद्ध में मरकर इनको स्वर्ग मिले, यह सोचकर ही आप इन राक्षसों का संहार करती हो।

हे देवी! सम्पूर्ण राक्षस आपके केवल देखने मात्र से ही भस्म हो सकते थे, फिर आपने अस्त्रों-शस्त्रों से इनका विनाश किया, इसका कारण यही था कि शस्त्र के प्रहार से राक्षसों को भी स्वर्ग प्राप्त हो जाए। इस प्रकार शत्रुओं के लिए भी आपके विचार कितने उत्तम हैं।

हे देवी! आपकी तलवार की उग्र प्रभा पुन्ज और त्रिशूल की चमक से उन राक्षसों की आँखे फूट जानी चाहिए थीं परन्तु इसका भी एक प्रमुख कारण यह है कि चन्द्रमा की किरण के सदृश आपका शीतल मुख उन्होंने देख लिया था।

हे देवी! आपका शील स्वभाव, दुराचारियों के दुष्ट स्वभाव को निवृत करने वाला है, आपका रूप अचिन्त्य है, उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। आपका पराक्रम तो देवताओं के पराक्रम को नष्ट करने वाले राक्षसों के पराक्रम को नष्ट करने वाला है। इस प्रकार आप शत्रुओं पर भी दया करती रहती हो।

हे देवी! आपके इस पराक्रम की बराबरी किसी से नहीं की जा सकती है। शत्रुओं को भयभीत करने वाला आपका पराक्रम और सुन्दर स्वभाव और किसी में नहीं है। हृदय में ममतामयी दया और

युद्ध क्षेत्र में कठोरता, तीनों लोकों में आपसे बढ़कर किसी में नहीं है।

हे देवी! युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं को मारकर तुमने उन्हें स्वर्गलोक में स्थान प्रदान किया। इस तरह आपने तीनों लोकों की रक्षा की है तथा उन उन्मत राक्षसों से जो हमें भय था, उसको भी दूर किया है। आपको हमारा बारम्बार नमस्कार है।

हे देवी! त्रिशूल से हमारी रक्षा करो। हे अम्बिके! तलवार से हमारी रक्षा करो तथा घण्टे की ध्वनि और धनुष की टंकार से हमारी रक्षा करो। हे दुर्गा देवी! चारों दिशाओं उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में अपने त्रिशूल को घुमाकर हमारी रक्षा करो। हे माता! तीनों लोकों में जो आपके सौम्य रूप हैं तथा असौम्य रूप हैं, उनसे हमारी रक्षा करो एवं इस पृथ्वी की भी रक्षा करो।

हे अम्बिके! आपके हाथों में जो खड्ग शूल और गदा आदि शस्त्र शोभायमान हैं, उनके द्वारा हमारी रक्षा करो। ऋषि बोले–"इस प्रकार सब देवताओं ने जगत माता भगवती की स्तुति की और नन्दनवन के पुष्पों तथा गन्ध अनुलेपनों द्वारा उनका पूजन किया। सभी देवताओं ने भक्ति-पूर्वक दिव्य धूपों द्वारा अर्चना की, फिर प्रणाम करने लगे। तब देवी दुर्गा प्रसन्न होकर उन देवताओं से बोलीं, हे

देवताओं! तुम सब लोग जिस वस्तु की अभिलाषा रखते हो मुझसे माँग लो।''

देवता बोले! ''भगवती ने हमारी सब इच्छाएँ पूर्ण कर दी हैं। अब हमें कुछ नहीं चाहिए। हमारा शत्रु महिषासुर मार गया है। हे महेश्वरी इतने पर भी यदि आप हमें कुछ और वर देना ही चाहती हैं तो जब-जब हम आपको स्मरण करें, तब-तब आप दर्शन देकर हम लोगों के महान संकट दूर कर दिया करें। हे मातेश्वरी! जो भी मनुष्य इन स्तुतियों द्वारा आपकी स्तुति करे, उसे वित्त, समद्धि और वैभव देने के साथ ही उसकी धन और स्त्री आदि सम्पत्ति को बढ़ाने के लिए आप सदा हम पर प्रसन्न रहें।''

ऋषि बोले–''हे राजन! देवताओं ने जब संसार के लिए तथा अपने लिए इस भाँति प्रश्न किया तो देवी ''तथास्तु'' कहकर अन्तर्धान हो गईं।

हे राजा! जिस प्रकार तीनों लोकों का हित चाहने वाली वह भगवती देवी-देवताओं के शरीर से उत्पन्न हुई थीं। वह सारा वृतात मैंने तुमसे कह दिया है। इसके पश्चात् दुष्ट असुरों तथा शुम्भ-निशुम्भ का वध करने के लिए तथा संसार की रक्षा के लिए और देवताओं की रक्षा करने के लिए देवी उत्पन्न हुई, वह सब कथा मैं तुम्हें सुनता हूँ, इसलिए तुम ध्यान से सुनो॥ ॐ॥

चौथा दिन

४. कूष्माण्डा

सुरासम्पूर्णकलशं रूधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तुमे॥

माता दुर्गा के चौथे स्वरूप का नाम कूष्माण्डा है। अपनी मन्द, हल्की हँसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने के कारण इनका नाम कूष्माण्डा पड़ा। नवरात्रों में चौथे दिन कूष्माण्डा देवी के स्वरूप की उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन "अनाहज" चक्र में स्थित होता है। अतः पवित्र मन से पूजा-उपासना के कार्य में लगाना चाहिए। माँ की उपासना मनुष्य को स्वभाविक रूप से भवसागर से पार उतरने के लिए सुगम और श्रेयस्कर मार्ग है। माता कूष्माण्डा की उपासना मनुष्य को आधिव्याधियों से विमुक्त करके उसे सुख समृद्धि और उन्नति की ओर ले जाती है। अतः अपनी लौकिक, पारलौकिक उन्नति चाहने वालों को कूष्माण्डा की उपासना में हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

पाँचवा अध्याय

देवी की स्तुति-अम्बिका के रूप की प्रशंसा

ॐ ऋषि बोले–"प्राचीन काल में शुम्भ-निशुम्भ नामक दो राक्षसों ने बल के मद में भरकर इन्द्र त्रिलोकी का राज्य और यज्ञों का भाग छीन लिया। तत्पश्चात् इन दोनों असुरों ने सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर, यम और वरुण के अधिकार भी छीन लिए। वायु और अग्नि के अधिकार भी छीनकर सब देवताओं को उनके राज्य से निकाल दिया। इस प्रकार देवतागण दोनों राक्षसों से परजित होकर तथा स्वर्ग से निकाल दिए जाने पर अपराजिता भगवती देवी का स्मरण करने लगे।

वे सोचने लगे कि भगवती देवी ने हमें पहले वरदान दिया था कि देवताओं पर विपत्ति आने पर मैं तुम्हारे स्मरण करने पर समस्त आपत्तियों का समूल नाश कर दूँगी। ऐसा सोचकर सब देवता इन्द्र के साथ हिमालय पर्वत पर विष्णा की माया देवी की स्तुति करने के लिए गए।

देवता बोले–"देवी और महादेवी को हम नमस्कार करते हैं, शिव को नमस्कार करते है, प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम करते हैं। हम नियम पूर्वक जगदम्बा को नमस्कार करते हैं। रोद्रा को प्रणाम है। नित्या, गौरी एवं धात्री को बारम्बार नमस्कार है। ज्योत्स्नामयी, चन्द्ररुपिणी एवं सुख स्वरूपा देवी को

सतत् प्रणाम है। शरणागतों का कल्याण करने वाली एवं सिद्धिरूपा देवी को बारम्बार नमस्कार करते हैं। राक्षसों की लक्ष्मी, राजाओं की लक्ष्मी तथा शर्वाणी (शिव पत्नी) को नमस्कार करते हैं। दुर्गा देवी को, दुर्ग स्थलों को पार करने वाली दुर्गा पारा को, सारा, सर्वकारिणी ख्याति, कृष्णा और धूम्र देवी को सदैव नमस्कार है।

अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्ररूपा को हम नमस्कार करते हैं। उन्हें हमारा बार-बार प्रणाम है। जगत की आधार भूत कृति देवी को बार-बार नमस्कार है। जिस देवी को प्राणी मात्र विष्णु की माया कहते हैं, उसको नमस्कार है। जो देवी समस्त प्राणियों में चेतना कहलाती है, उसको नमस्कार है। जो देवी सम्पूर्ण प्राणियों में बुद्धिरूप से स्थित है उसको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में निद्रा रूप से विराजमान है, उनको नमस्कार है। जो देवी सम्पूर्ण प्राणियों में क्षुधा रूप से विराजमान है, उनको नमस्कार है। जो देवी सम्पूर्ण प्राणियों में छाया रूप से स्थित है उसको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में जाति रूप से स्थित है, उसको नमस्कार है।

जो देवी सब प्राणियों में लज्जा रूप से स्थित है, उसको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धारूप से स्थित है उनको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में कान्ति रूप से स्थित है, उनको

नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी रूप से स्थित है, उनको नमस्कार है। जो देवी समस्त प्राणियों में वृत्ति रूप से स्थित है, उनको नमस्कार है। जो देवी समस्त जीवों में स्मृति रूप से विराजमान है, उनको नमस्कार है, उनको बारम्बार नमस्कार है।

जो देवी समस्त जीवों में दया रूप से स्थित है, उनको नमस्कार है, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी समस्त जीवों में तुष्टि रूप से स्थित है, उनको नमस्कार है। जो देवी समस्त जीवों में मातृरूप से स्थित है, उनको नमस्कार है। जो देवी सब जीवों में भ्राँति रूप से स्थित है, उनको नमस्कार है। जो देवी सभी प्राणियों की इन्द्रियों की अधिष्ठात्री है और उसी प्रकार सब में व्याप्त है, उस देवी को बारम्बार नमस्कार है। जो देवी चैतन्य रूप से इस सम्पूर्ण संसार को व्याप्त करके स्थित है, उसको बारम्बार नमस्कार है।

पूर्व काल में देवताओं ने अपना अभिष्ट फल पाने के लिए जिस भगवती की स्तुति की है और देवराज इन्द्र ने बहुत दिनों तक जिसका सेवन किया है वह कल्याण की साधना भूजा ईश्वरी हमारा कल्याण करें तथा सारी विपत्तियों को नष्ट करें।

राक्षसों द्वारा पीड़ित हम सब देवता उस परमेश्वरी को प्रणाम करते हैं तथा जो भक्ति पूर्वक स्मरण करने पर तुरन्त ही सब विपत्तियों को नष्ट करने की क्षमता रखती है, वह जगदम्बा इस समय हमारा

कल्याण करके हमारी सम्पूर्ण विपत्तियों को दूर करने की कृपा करें।

महर्षि मेधा बोले–"हे राजन! इस प्रकार जब सब देवता देवी की स्तुति कर रहे थे तो उसी समय देवी पार्वती गंगा में स्नान करने के लिए आईं। उस समय पार्वतीजी ने देवताओं से कहा कि आप लोग इस समय किसकी स्तुति कर रहे हैं ?" तब उनके शरीर कोष से प्रकट होकर शिवा बोली! ये देवता शुम्भ दैत्य द्वारा निष्काषित एवं संग्राम में निशुम्भ दैत्य से पराजित हुए, मेरी स्तुति कर रहे हैं। पर्व्वती जी के शरीर कोष से उसी समय अम्बिका देवी प्रकट हुईं जो समस्त लोकों में कौशिकी नाम से प्रसिद्ध हुईं। जिस समय पार्वती जी के शरीर कोष से अम्बिका प्रकट हुईं उस समय से पार्वती जी का शरीर काले रंग का हो गया और तब से उनका नाम कालिका देवी पड़ गया और वे हिमालय पर निवास करने चली गईं।

शुम्भ और निशुम्भ के दूत चण्ड-मुण्ड वहाँ आए और उन्होंने परम मनोहर रूप वाली अम्बिका देवी को देखा। चण्ड-मुण्ड, शुम्भ-निशुम्भ के पास जाकर बोले–"हे महाराज! एक सुन्दर स्त्री हिमालय को प्रकाशित कर रही है। हे असुरेश्वर! हमने उस जैसी परम सुन्दर स्त्री को अब तक कहीं नहीं देखा इसलिए यह पता करना चाहिए कि वह कौन है और किसकी है ?" वह सब स्त्रियों में रत्न है, वह अपनी कान्ति से दसों दिशाओं को प्रकाशित कर रही है। आप चलकर उसे देख लें। हे स्वामी! तीनों लोकों में हाथी, घोड़े और मणि इत्यादि जितने रत्न हैं वह सब इस समय आपके घर में

शोभायमान हैं। हाथियों में हाथी एरावत हाथी और घोड़ों मे उच्चैः श्रवा घोड़ा और पारिजात नामक वृक्ष आप इन्द्र से प्राप्त कर चुके हैं।

हंस सहित रत्न जड़ित ब्रह्माजी का अद्भुत विमान भी आपके पास है। महापद्म नामक निधि आपने कुबेर से ले ली है। समुद्र ने आपको किंजल्किनी नाम की माला प्रदान की है जिसके कमल कभी मुरझाते नहीं हैं। सोने की वर्षा करने वाला वरुण का क्षत्र भी आपके पास है। रथों में श्रेष्ठ प्रजापति का रथ भी आपके पास है।

हे असुरराज! मृत्यु से उत्क्रांतिदा नामक शक्ति भी आपने छीन ली है तथा वरुण का पाश भी आपके भाई निशुम्भ के पास ही है। निशुम्भ ने समुद्र में उत्पन्न होने वाले सब प्रकार के रत्न भी अपने अधिकार में कर लिए हैं और ऐसे भी दो वस्त्र भी अग्नि देव ने आपको दिए हैं जिन्हें अग्नि नहीं जला सकती है। हे दैत्यराज! इस प्रकार सभी रत्नरूपी वस्तुएँ आप संग्रह कर चुके हैं। अब आप कल्याणमयी स्त्रियों में रत्न रूपी इस स्त्री को ग्रहण करें।

ऋषि बोले! चण्ड-मुण्ड के वचन सुनकर शुम्भ ने सुग्रीव नामक राक्षस को अपना दूत बनाकर देवी के पास भेजा। सुग्रीव से शुम्भ ने कहा कि तुम मेरी ओर से इस प्रकार कहना और ऐसा उपाय

करना जिससे वह प्रसन्न होकर यहाँ शीघ्र आने को तैयार हो जाए। सुग्रीव शीघ्र पर्वत के उस स्थान पर पहुँचा जहाँ पर देवी बैठी हुई थीं। वह स्थान अत्यन्त सुन्दर था। वहाँ पहुँचकर सुग्रीव ने मधुर वाणी में देवी से कहा–"हे देवी! दैत्यों के राजा शुम्भ ने जो तीनों लोकों के अधिपति हैं, मुझे आपके पास भेजा है। उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस किसी भी देवता में नहीं है तथा राक्षसों के समस्त शत्रुओं पर उन्होंने विजय प्राप्त कर ली है। उन्होंने आपके लिए सन्देश भेजा है कि तीनों लोकों पर मेरा अधिकार है, सब देवता मेरे आधीन हैं। यज्ञ के सब भागों को अलग-अलग मैं ही ग्रहण करता हूँ।

तीनों लोकों के उत्तम रत्नों के हम स्वामी हैं। इन्द्र का एरावत हाथी भी हमारे पास है। समुद्र मंथन से उत्पन्न हुआ उच्चैः श्रवा नामक घोड़ा भी देवताओं ने हमें भेंट कर दिया है। देव, गन्धर्व एवं नागों के पास जितनी भी रत्न रूपी वस्तुएँ थीं वे सब अब मेरी हो चुकी हैं। आप भी स्त्रियों में एक रत्न ही हैं। इसलिए आपको भी हमारे पास आ जाना चाहिए क्योंकि मैं रत्नों का भक्त हूँ। अब मैं यह तुम पर छोड़ता हूँ कि तुम मेरे साथ या मेरे पराक्रमी भाई निशुम्भ के साथ विवाह कर लो। यदि तुम मुझसे विवाह करोगी तो अतुल महान ऐश्वर्य को प्राप्त करोगी।

महर्षि मेधा ने कहा–"दूत के ऐसा कहने पर भगवती दुर्गा मन ही मन मुस्कराईं और इस प्रकार बोलीं–"हे दूत! तुमने जो कहा वह सब सत्य है। इसमें किंचित्मात्र भी झूठ नहीं है। शुम्भ इस समय

तीनों लोकों का स्वामी है और निशुम्भ भी उसी की भाँति पराक्रमी है, परन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा कर रखी है। वह प्रतिज्ञा यह है कि मुझे जो युद्ध में हरा देगा और मेरे इस अभिमान को खंडित कर देगा तथा बल में जो व्यक्ति मेरे समान होगा, वही मेरा पति होगा। इसलिए शुम्भ-निशुम्भ में से जो भी मुझे युद्ध में हरा देगा मैं उसी से विवाह कर लूँगी। मेरा यह संदेश उन तक पहुँचा दो।''

दूत सुग्रीव बोला--''हे देवी! आप अभिमान से भरी हुई हो, मेरे सम्मुख ऐसी बातें न करें। इस त्रिलोकी में तो मुझे कोई ऐसा दिखाई नहीं देता जो शुम्भ-निशुम्भ को हरा सके।''

जब देवताओं में से कोई शुम्भ व निशुम्भ के सामने न ठहर सका तो फिर तुम जैसी कमनीय स्त्री भला रणभूमि में उसका मुकाबला कैसे कर सकेगी। तुम मेरा कहना मानकर शुम्भ-निशुम्भ के पास चली जाओ। ऐसा करने से तुम्हारे गौरव की रक्षा होगी, अन्यथा जब वे तुम्हारे केश पकड़कर तुम्हें घसीटते हुए ले जाएँगे तब तुम्हारा गौरव नष्ट हो जाएगा।

देवी बोलीं! शुम्भ-निशुम्भ बड़े बलवान हैं। यह ठीक है परन्तु मैं अपनी प्रतिज्ञा से बँधी हुई हूँ। इसलिए तुम जाओ और मैंने जो कुछ कहा है वह आदरपूर्वक असुरराज से कह दो। इसके पश्चात् वे जो उचित समझें करें।

छठा अध्याय

धूम्र लोचन-वध

ॐ ऋषि बोले–"देवी की बात सुनकर दूत सुग्रीव क्रोध में भरकर असुर सम्राट शुम्भ के पास पहुँचा और देवी के साथ हुई सारी बातचीत विस्तारपूर्वक बता दी। दूत की बात सुनकर शुम्भ के क्रोध का पारावार न रहा और दैत्य सेनापति धूम्रलोचन से बोला–"तुम शीघ्र अपनी सेना को लेकर वहाँ जाओ और उस दुष्टा को केशों से पकड़कर घसीटते हुए यहाँ ले आओ। यदि उसकी रक्षा करने के लिए कोई देवता, यक्ष या गन्धर्व आए तो उसे भी मार डालना।"

महर्षि मेधा बोले–"आज्ञा पाते ही धूम्रलोचन साठ हज़ार असुरों की सेना लेकर चल दिया। वहाँ पहुँचकर उसने हिमालय पर्वत पर विराजमान देवी को देखा और ऊँची आवाज़ में बोला–"अरी तू अभी शुम्भ-निशुम्भ के पास चल। यदि प्रसन्नतापूर्वक मेरे स्वामी के पास नहीं चलेगी तो स्मरण रख कि मैं तुम्हें बालों से पकड़कर घसीटता हुआ बलपूर्वक ले जाऊँगा।"

देवी बोलीं! दैत्य राज शुम्भ ने तुम्हें सेना लेकर मुझे बलपूर्वक लाने के लिए भेजा है। यदि तू मुझे बलपूर्वक ले जाएगा तो मैं तेरा क्या कर सकती हूँ ?

ऐसा कहने पर धूम्रलोचन देवी जगदम्बा को पकड़ने के लिए झपटा तो देवी ने अपनी हुंकार से ही धूम्रलोचन को भस्म कर डाला। यह देखकर असुर सेना क्रोध में भरकर अम्बिका देवी की तरफ लपकी परन्तु देवी ने उन पर तीखे बाणों, शक्तियों तथा फरसों की वर्षा आरम्भ कर दी। इधर देवी दुर्गा का वाहन शेर भी कुपित होकर भयंकर आवाज़ करता हुआ असुरों की सेना पर उछल पड़ा। शेर ने कई असुरों को पंजो से, कई को जबड़ों से, कई को धरती पर पटककर अपनी दाढ़ों से घायल करके मार डाला। उसने अपने नखों से कितने ही असुरों के पेट फाड़ डाले और कितने ही असुरों के सिर धड़ से अलग कर दिए। वह दैत्यों के पेट फाड़कर उनका रस चूसने लगा।

क्षणभर में ही देवी के वाहन शेर ने राक्षसों की सारी सेना का संहार कर डाला। शुम्भ को जब यह समाचार मिला कि देवी ने धूम्रलोचन को मार डाला और उसके वाहन शेर ने सारी सेना को मौत के घाट पहुँचा दिया, तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने चन्ड-मुण्ड को आज्ञा दी कि तुम बहुत बड़ी सेना लेकर वहाँ जाओ और उस स्त्री को पकड़कर ले आओ। यदि उसे युद्ध करना पड़े तो सारी असुर सेना मिलकर उसे मार डालो। उस दुष्टा की हत्या होने पर तथा सिंह के मारे जाने पर वह स्त्री जिस दशा में भी पड़ी हो उसे बाँधकर शीघ्र लेकर लौटो।

पाँचवा दिन

५. स्कन्दमाता

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

माँ दुर्गा के पाँचवे स्वरूप को स्कन्दमाता कहा जाता है। ये भगवान स्कन्द ''कुमार कार्तिकेय'' के नाम से भी जाने जाते हैं। इन्हीं भगवान स्कन्द अर्थात् कार्तिकेय की माता होने के कारण माँ दुर्गा के इस पाँचवे स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। इनकी उपासना नवरात्रि पूजा के पाँचवे दिन की जाती है। इस दिन साधक का मन ''विशुद्ध'' चक्र में स्थित रहता है। इनका वर्ण शुभ्र है। ये कमल के आसन पर विराजमान हैं। इसलिए इन्हें पद्मासन देवी भी कहा जाता है। इनका वाहन भी सिंह है।

नवरात्र-पूजन के पाँचवे दिन का शास्त्रों में पुष्कल महत्त्व बताया गया है। इस चक्र में अवस्थित रहने वाले साधक की समस्त बाह्य क्रियाएँ एवं चित्त वृत्तियों का लोप हो जाता है।

सातवाँ अध्याय

चण्ड-मुण्ड का वध

ॐ ऋषि बोले–"दैत्य राज शुम्भ की आज्ञा पाकर चण्ड-मुण्ड चतुरंगिनी सेना को साथ लेकर देवी दुर्गा से युद्ध करने तथा उसे बंदिनी बनाने के लिए चल दिए। हिमालय पर्वत पर पहुँचकर उन्होंने देवी को अपने वाहन सिंह पर बैठी हुई देखा। वे सब धनुष उठाकर और हाथों में तलवार उठाकर देवी के समीप पहुँच गए।

देवी ने जब चण्ड-मुण्ड और असुर सेना को देखा तो क्रोध से उनका मुख काला हो गया। उनकी भृकुटियाँ चढ़ गईं और उनके ललाट से भयंकर विस्तृत मुख वाली, लाल आँखों वाली काली देवी प्रकट हुईं। वह अपने हाथों में तलवार और पाश लिए हुई थीं। वह विचित्र खड्ग धारण किए चीते के चर्म की साड़ी तथा नरमुण्डों की माला धारण किए हुई थीं। उनका भयानक शुष्क शरीर केवल हड्डियों का ढांचा था जिससे वह अत्यन्त भयंकर जान पड़ती थीं।

उनका मुख विशाल था, जीभ लपलपाने के कारण वे और भी डरावनी लग रही थीं। आँखें

अन्दर की ओर धँसी हुई थीं और लाल हो रही थीं। उनकी भयंकर गर्जना से सम्पूर्ण दिशाएँ गूँज रही थीं। कालिका देवी बड़े वेग से दैत्यों की विशाल सेना पर टूट पड़ी और उनका भक्षण करने लगीं। वह पार्श्व रक्ष को, अंकुश धारी महावतों, हाथियों पर सवार योद्धाओं पर घण्टा सहित हाथियों को एक हाथ से पकड़-पकड़ कर अपने मुँह में डाल रही थीं।

इसी प्रकार वह घोड़ों, रथों, सारथियों व रथों में बैठे हुए सैनिकों को मुँह में डालकर भयानक रूप से चबा रही थीं। किसी के केश पकड़कर, किसी की गर्दन पकड़कर, किसी को पैरों से दबाकर और किसी को छाती से मसलकर मार रही थीं। दैत्यों के द्वारा फैंके गए बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों को मुँह से पकड़कर उन्हें दाँतों से चबा रही थीं।

देवी काली ने दैत्यों की सारी सेना रौंद डाली। कुछ को तलवार से मौत के घाट उतार दिया। कुछ की खट्वांग से पीट दिया और कुछ को दाँतों से चबा डाला। इस प्रकार कालिका देवी ने क्षण भर में सम्पूर्ण दैत्य सेना का संहार कर डाला। यह देख महापराक्रमी चण्ड कालिका देवी पर लपका। उसने महाभयंकर वाणों की वर्षा करके तथा मुण्ड ने हज़ारों चक्र फेंककर भयंकर नेत्र वाली कालिका देवी को ढक दिया। चण्ड-मुण्ड द्वारा फेंके गए अस्त्रों-शस्त्रों को देवी ने मुँह में इस प्रकार समा

लिया मानों सूर्य के बहुत से मण्डल बादलों के उदर में प्रवेश कर रहे हों।

अब तो देवी के भयानक मुँह के भीतर देखना भी कठिन था। दाँतों के प्रकाश से दमकती हुई अत्यन्त क्रोध में भयानक गर्जना करती हुई देवी अट्टहास करने लगीं। देवी ने बहुत बड़ी तलवार लेकर "हं" का उच्चारण करके चण्ड पर धावा किया और उसके केश पकड़कर उसी तलवार से उसका मस्तक काट लिया। चण्ड को मरा देख क्रूर मुण्ड असुर भी देवी की तरफ दौड़ा तो क्रोधित देवी ने उसे भी तलवार से मौत के घाट उतार दिया। चण्ड-मुण्ड के मारे जाने पर शेष असुर सेना भय से व्याकुल होकर युद्ध क्षेत्र से पलायन कर गई।

इसके बाद कालिका देवी ने चण्ड-मुण्ड के सिर हाथ में लेकर अट्टहास करती हुई देवी चण्डिका के पास पहुँचकर बोलीं ये लो चण्ड-मुण्ड के सिर, मैंने महापशु दैत्य चण्ड-मुण्ड को मार दिया है। अब तुम इसे युद्ध में शुम्भ-निशुम्भ को मौत के घाट उतारना।

मेधा ऋषि बोले-"चण्ड-मुण्ड के सिरों का कालिका देवि के हाथों में देखकर देवी चण्डिका बोलीं-हे देवी! तुम आज से इस संसार में चामुण्डा देवी के नाम से विख्यात हो जाओगी।

आठवाँ अध्याय

रक्तबीज वध

ॐ मेधा ऋषि बोले–''चण्ड-मुण्ड के मारे जाने पर तथा बहुत सी सेना के मारे जाने से शुम्भ ने क्रोध में भरकर सारी असुर सेना को तैयार होने का आदेश दिया। उसने कहा आज उदायुद्ध नाम के छियासी दैत्य सेनापति अपनी सेनाओं के साथ युद्ध के लिए प्रस्थान करें। कम्बू नाम के दैत्यों के ८४ सेना नायक अपनी वाहिनी से घिरे हुए प्रस्थान करें। कोटि वीर्य नामक पचास सेनापति और धौम्रकुल नाम के सौ सेनापति भी युद्ध के लिए प्रस्थान करें। कालका दौर्हृद मयूर वंशी तथा काल वंशी असुर, युद्ध के मैदान में पहुँचे, यह मेरी आज्ञा है। इस प्रकार राजा शुम्भ भी स्वयं बहुत बड़ी सेना लेकर युद्ध के लिए चला।''

चण्डिका देवी ने देखा कि शुम्भ भयानक सेना लेकर आ रहा है तो उन्होंने अपने धनुष से टंकार करके पृथ्वी और आकाश के मध्य भाग को गुँजा दिया। उनके सिंह ने भी महान गर्जना की। चण्डिका ने अपना घण्टा बजाकर नाद दूना कर दिया जिससे कालिका का मुँह और बढ़ गया। धनुष

की टंकार, सिंह की गर्जना और घण्टे की आवाज़ से इतना शोर गुंजार हो गया कि चारों दिशाएँ परिपूर्ण हो गईं।

इस तुमुल नाद को सुनकर दैत्यों की सेना ने चण्डिका देवी, वाहन शेर और कालिका देवी को चारों ओर से घेर लिया। हे राजन! ऋषि बोले–"इस अवसर पर दैत्यों के विनाश के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कार्तिकेय, इन्द्र आदि देवताओं की शक्तियाँ उनके शरीरों से निकलकर उन्हीं रूपों से चण्डिका देवी के पास आ गईं।"

सबसे पहले हंस युक्त विमान पर सवार कमण्डलु से सुशोभित ब्रह्माजी की शक्ति उपस्थित हुई जिसे ब्राह्मणी कहते हैं। महेश्वर की माहेश्वरी शक्ति वृषभ पर सवार होकर त्रिशूल धारण किए हुए आईं।

मोर पर आरूढ़ होकर, हाथ में शक्ति लिए कार्तिकेय जी की शक्ति उन्हीं का रूप धारण करके आईं। भगवान विष्णु की शक्ति गरुड़ पर सवार होकर शंख, चक्र, गदा, शार्ङ्ग, धनुष तथा हाथ में खड्ग लिए हुए आईं। श्री हरि की शक्ति वाराही, वाराह का शरीर धारण करके आईं। नृसिंह जी की शक्ति, नृसिंह जी के समान शरीर धारण कर वहाँ आ पहुँची। इन्द्र की शक्ति इन्द्र का रूप धारण कर

वज्र हाथ में लेकर एरावत हाथी पर बैठकर युद्ध में आ गईं। तब देव शक्तियों सहित चण्डिका देवी से महादेव ने कहा–"मेरी प्रसन्नता के लिए इन असुरों का संहार करो।"

इतना कहते ही देवी के शरीर से भयंकर रूप धारण किए हुए चण्डिका की शक्ति प्रकट हुई जिसकी चिक्कार सैंकड़ों चिक्कारों के समान थी। उस अपराजित देवी ने धूम्र रंग की जटा वाले शंकर जी से कहा–"हे भगवन्! आप मेरे दूत के रूप में शुम्भ के पास जाकर उससे तथा निशुम्भ और दूसरे राक्षसों से जो यहाँ युद्ध करने हेतु आए हैं उनसे कहना कि यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो त्रिलोकी राज्य इन्द्र को सौंप दो। देवताओं को उनका यज्ञ का भाग मिलना चाहिए और तुम सब पाताल लौट जाओ। यदि बल के घमण्ड में तुम्हें लड़ने की इच्छा हो तो फिर तुम्हारे माँस से मेरी योगिनियाँ तृप्त होंगी।"

भगवान शिव को देवी के दूत के रूप में भेजा गया था इसलिए वे संसार में शिवदूती के नाम से प्रसिद्ध हुए। भगवान शिव ने देवी के दूत के रूप में जब महाअसुरों के पास जाकर देवी के वचन सुनाए तो वे सब क्रोध से भर गए और कात्यायनी देवी से युद्ध करने के लिए आगे बढ़े। राक्षसों ने बाण, शक्ति, ऋष्टि आदि आयुद्धों से देवी पर आक्रमण कर दिया। इस पर देवी ने अपने धनुष से

पैने बाण छोड़कर राक्षसों द्वारा छोड़े हुए अस्त्रों-शस्त्रों को बच्चों के खेल के समान काट डाला।

इसके बाद कालिका देवी ने उनके सम्मुख होकर शत्रुओं के शूल के प्रहारों को चीरती फाड़ती खट्वांग से कुचलती विचरने लगी। ब्रह्माणी देवी भी जिधर निकल जाती वहाँ वह अपने कमण्डल से राक्षसों पर जल छिड़कर उनके बल और पराक्रम को नष्ट कर रही थीं। इसी प्रकार माहेश्वरी भी अत्यन्त क्रोध में भरकर त्रिशूल से तथा वैष्णव देवी अपने चक्र से और कौमारी देवी अपनी शक्ति से राक्षसों का विनाश कर रही थीं।

ऐन्द्री देवी ने अपने वज्र द्वारा सैकड़ों असुरों को काट डाला जिससे वे पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके शरीर से रक्त की धारा बहने लगी। वाराही देवी अपने तुण्ड के प्रहार से असुर सेना का विनाश करने लगीं। बड़े-बड़े राक्षसों के सिर उनके चक्र से कट कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे। नारसिंही भी अपने नखों से राक्षसों को विदीर्ण करके उनका भक्षण करने लगीं और सिंह नाद से चारों दिशाओं को गुँजारती हुई रणभूमि में विचरण करने लगी।

शिवदूती के प्रचण्ड अट्टहास से कितने ही दैत्य भयभीत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके गिरते ही वह उनका भक्षण कर जाती थीं।

इसी प्रकार क्रोधित मातृगणों द्वारा अनेकानेक उपायों से बड़े-बड़े राक्षसों को मरते हुए देखकर राक्षसी सेना भाग खड़ी हुई। सेना की भागते देखकर रक्त बीज नामक महापराक्रमी असुर क्रोध में भरकर युद्ध के लिए आगे बढ़ा। रक्तबीज की विशेषता थी कि उसके शरीर से रक्त की बूँदे जैसे ही पृथ्वी पर गिरती थीं तुरन्त वैसे ही शरीर वाले बलवान दैत्य पृथ्वी से उत्पन्न हो जाते थे। रक्तबीज हाथ में गदा लेकर इन्द्रशक्ति ऐन्द्री के साथ युद्ध करने लगा। जब ऐन्द्री ने अपने वज्र से रक्तबीज को मारा तो रक्तबीज के शरीर से बहुत सा रक्त निकलकर पृथ्वी पर गिरने लगा और उससे उसी के समान रूप तथा पराक्रम वाले योद्धा उत्पन्न हो गए।

इस प्रकार रक्तबीज के रक्त से उत्पन्न दैत्य मातृगणों के साथ घोर युद्ध करने लगे। इस पर देवी ने वज्र प्रहार से रक्तबीज का सिर काट दिया तो उसके शरीर से जो रक्त बहा उससे हज़ारों राक्षस पैदा हो गए।

वैष्णव शक्ति ने चक्र द्वारा रक्तबीज को मारा, तो उसके शरीर से ज्यों ही रक्त बहा तो उससे हज़ारों उसी के समान महाअसुर पैदा हो गए जिससे सारा संसार भर गया। इससे देवता भयभीत हो

गए। देवताओं को डरा हुआ एवं उदास देखकर तब चण्डिका देवी ने काली देवी से कहा–"हे चामुण्डे! तुम अपना मुख विस्तार से फैला लो। मेरे शस्त्र प्रहार से गिरते हुए रक्त को अपने मुख से पीती जाओ। इस प्रकार रक्त से उत्पन्न असुरों का भक्षण करती हुई भ्रमण करोगी तो रक्तबीज का सम्पूर्ण रक्त समाप्त हो जाएगा तथा रक्त के पृथ्वी पर न गिरने से नए राक्षस पैदा नहीं हो सकेंगे।"

इस तरह काली देवी को समझाकर देवी दुर्गा ने रक्त बीज पर त्रिशूल से प्रहार किया। तत्काल ही देवी काली ने रक्तबीज के रक्त को अपने मुख से पी लिया। उसी समय रक्तबीज ने देवी चण्डिका पर गदा से प्रहार किया परन्तु उसके प्रहार का देवी पर कुछ भी असर नहीं हुआ। रक्त बीज के क्षत-विक्षत शरीर से बहुत सा रक्त बहने लगा परन्तु उसके रक्त को पृथ्वी पर गिरने से पहले ही काली ने उसे अपने मुँह में ले लिया। तदन्तर देवी चण्डिका ने रक्तबीज को वज्र, बाण, खड्ग तथा ऋष्टि इत्यादि से मार डाला। इस प्रकार रक्तहीन होकर रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा। रक्तबीज के पृथ्वी पर गिरते ही वह रक्तहीन हो जाने के कारण मर गया। रक्तबीज के मरते ही देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए। मातृशक्तियाँ उन महाअसुरों का रक्त पी-पीकर मदोन्मत होकर नाचने लगीं।

छठा दिन

६. कात्यायनी

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी॥

माँ दुर्गा के छठे स्वरूप को कात्यायनी कहते हैं। कात्यायनी महर्षि कात्यायन की कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर उनकी इच्छानुसार उनके यहाँ पुत्री के रूप में पैदा हुई थी। महर्षि कात्यायन ने सर्वप्रथम इनकी पूजा की थी, इसीलिए ये कात्यायनी के नाम से प्रसिद्ध हुईं। माँ कात्यायनी अमोद्य फलदायिनी हैं। दुर्गा पूजा के छठे दिन इनके स्वरूप की पूजा की जाती है। इस दिन साधक का मन "आज्ञा चक्र" में स्थित रहता है। योग साधना में इस आज्ञा चक्र का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस चक्र में स्थित मन वाला साधक माँ कात्यायनी के चरणों में अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है। भक्त को सहजभाव से माँ कात्यायनी के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। इनका साधक इस लोक में रहते हुए भी अलौकिक तेज से युक्त हो जाता है।

नौंवा अध्याय

निशुम्भ वध

ॐ राजा बोले–"हे ऋषि श्रेष्ठ! आपने रक्तबीज के वध से सम्बन्ध रखने वाला देवी चरित्र का यह अनोखा माहात्म्य मुझे सुनाया।" रक्तबीज की मृत्यु के बाद शुम्भ-निशुम्भ दैत्यों ने क्या किया। यह मैं आपसे जानना चाहता हूँ। ऋषि बोले–"रक्तबीज के मारे जाने पर शुम्भ-निशुम्भ क्रोध में भर गए।

दैत्यों की प्रधान सेना को लेकर निशुम्भ देवी से युद्ध करने आया। महापराक्रमी शुम्भ भी सेना सहित चण्डिका देवी को मारने के लिए आगे बढ़ा। शुम्भ और निशुम्भ का देवी से घोर युद्ध हुआ। दोनों भाई शुम्भ-निशुम्भ देवी पर इस प्रकार बाणों को छोड़ने लगे मानों मेघ वर्षा कर रहे हों। देवी ने असुरों द्वारा छोड़े गए बाणों को अपने बाणों से काट डाला और अपने शस्त्रों की वर्षा से उनको चोट पहुँचाई।

निशुम्भ ने तेज़ धार वाली तलवार और चमकती ढाल लेकर देवी के वाहन सिंह के मस्तक पर वार किया। इस पर देवी ने क्षुरप्र नामक बाण से निशुम्भ की तलवार काट डाली और उसकी ढाल के

जिसमें आठ चाँद जड़े थे, टुकड़े-टुकड़े कर डाले। ढाल और तलवार के कट जाने पर निशुम्भ ने शक्ति का प्रहार किया जिसके देवी ने अपने चक्र से दो टुकड़े कर दिए। निशुम्भ मारे क्रोध के जल भुन गया और देवी पर शूल से वार किया परन्तु देवी ने अपने मुक्के से शूल को चूर-चूर कर डाला।

इसके बाद देवी पर उसने गदा से प्रहार किया। देवी ने त्रिशूल से गदा को काट दिया। अब वह फरसा लेकर देवी की ओर लपका। देवी ने अपने तीखे बाणों से घायल कर दिया। अपने भयानक पराक्रमी भाई निशुम्भ के घायल हो जाने पर शुम्भ क्रोध में भर गया और देवी अम्बिका को मारने के लिए दौड़ा।

शुम्भ रथ पर बैठा था, उसके आठ भुजाएँ थीं। उनमें भयंकर शस्त्र शोभायमान थे। वह अपनी भुजाओं से सारे आकाश को ढाँपकर शोभायमान हो रहा था। देवी ने शुम्भ को देखकर शंखनाद किया तथा अति दुःसह धनुष की प्रत्यंचा का शब्द किया। अपने घंटे के शब्द से चारों दिशाएँ भर दीं जिसकी आवाज़ से असुर सेना का तेज नष्ट हो गया।

देवी के सिंह ने भी अपनी दहाड़ से, जिसे सुन बड़े-बड़े बलवानों का मद चूर-चर हो जाता था, आकाश, पृथ्वी और दसों दिशाओं को पूरित कर दिया। इसके बाद आकाश में उछलकर काली ने

अपने दाँतों और हाथों को ज़मीन पर पटका, उसका ऐसा करने से ऐसा शब्द उत्पन्न हुआ कि पहले के सारे शब्द शान्त हो गए। शिव-दूती ने असुरों में भय उत्पन्न करने के लिए अट्टहास किया जिसे सुनकर सब राक्षस घबरा उठे और शुम्भ क्रोध में भर गया।

देवी अम्बा ने शुम्भ से कहा–"अरे दुष्ट खड़ा रह, खड़ा रह। इस पर आकाश से सभी देवता जय हो! जय हो! बोल उठे। शुम्भ ने वहाँ आकर ज्वालाओं से युक्त एक भयंकर शक्ति छोड़ी जिसे देवी ने अपनी महोल्का नामक शक्ति से काट डाला। इस पर शुम्भ ने सिंह नाद किया जिससे तीनों लोक गूँज उठे और सिंहनाद का इतना घोर शब्द हुआ कि उसने पहले के नाद को दबा दिया।

शुम्भ द्वारा चलाए गए बाणों को देवी ने और देवी द्वारा चलाए गए बाणों को शुम्भ ने काट दिया। क्रोध में भरकर देवी चण्डिका ने शुम्भ पर त्रिशूल चलाया, जिससे मूर्छित होकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब उसकी मूर्छा दूर हुई तो वह हाथ में धनुष लेकर देवी अम्बा, देवी काली तथा सिंह को घायल करने लगा।

इसके बाद शुम्भ ने दस हज़ार भुजाएँ धारण कर चक्रादि आयुधों से देवी को आच्छादित कर दिया। दुर्गम विपत्तियों का विनाश करने वाली दुर्गा ने क्रोध में भरकर उस सब चक्रों तथा बाणों को अपने चक्र तथा बाणों से काट डाला। असुर सेना से घिरा हुआ निशुम्भ बड़ी तेज़ी से गदा लेकर

देवी पर लपका।

निशुम्भ के आते ही देवी ने तीक्ष्णधार वाले खड्ग से उसकी गदा को काट डाला। अब निशुम्भ ने त्रिशूल लेकर आक्रमण किया तो देवी दुर्गा ने वेग से अपने शूल से निशुम्भ का वक्ष-स्थल छेद डाला। शूल से विदीर्ण हो जाने पर निशुम्भ की छाती से एक दूसरा महाबली एवं पराक्रमी पुरुष "खड़ी रह, खड़ी रह" कहता हुआ निकला।

उसको देखकर देवी ने बड़ी ज़ोर का ठहाका लगाया। अभी वह निकलने भी नहीं पाया था कि देवी ने उसका सिर काट दिया। सिर के कटते ही वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। इसके बाद सिंह दहाड़कर असुरों का भक्षण करने लगा। काली और शिवदूती भी राक्षसों का रक्त पीने लगीं। कौमारी की शक्ति से कितने ही महादैत्य नष्ट हो गए। ब्रह्माजी के कमण्डल के जल से कितने ही असुर समाप्त हो गए।

कई दैत्य माहेश्वरी के त्रिशूल से विदीर्ण होकर पृथ्वी पर गिर पड़े और कई वाराही के प्रहारों से छिन्न-भिन्न होकर धराशायी हो गए। वैष्णवी ने भी अपने चक्र से बड़े-बड़े महापराक्रमियों का कचूमर निकालकर यमलोक पहुँचा दिया। ऐन्द्री के हाथ से छूटे हुए वज्र द्वारा कितने ही राक्षस यमपुरी पहुँच गए। कितने ही राक्षसों को काली, शिवदूती और सिंह ने भक्षण कर लिया।

दसवाँ अध्याय

शुम्भ वध

ॐ मेधा ऋषि बोले–'' हे राजन! अपने प्यारे भाई निशुम्भ को मरा हुआ देखकर तथा बहुत सी सेना के भी नष्ट हो जाने पर शुम्भ के क्रोध की सीमा न रही।'' वह देवी को सम्बोधित करते हुए बोला–''हे दुष्टे दुर्गा! तू अपने बल पर अंहकार मत कर क्योंकि तू तो दूसरों के बल पर लड़ रही है।''

देवी दुर्गा ने उत्तर दिया हे दुष्ट दानव! देख मैं तो अकेली ही हूँ। इस संसार में मेरे अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। यह सब तो मेरी शक्तियाँ हैं। यह देख ये सब मुझमें समा रही हैं। इतना कहते ही ब्रह्माणी आदि सब देवियाँ दुर्गा के शरीर में प्रवेश कर गईं तथा दुर्गाजी अकेली रह गईं। देवी बोलीं– ''मैं अपनी विभूति से अनेक रूपों में यहाँ प्रकट हुई थी। उन सब रूपों को मैंने समेट लिया है। अब मैं युद्ध के मैदान में अकेली खड़ी हूँ, तू भी यहाँ स्थिर भाव से ठहर।''

ऋषि बोले–''तब देवताओं और राक्षसों के देखते-देखते देवी और शुम्भ में भयंकर युद्ध छिड़

गया। देवी दुर्गा ने सैकड़ों अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया। शुम्भ ने भी भयंकर अस्त्र-शस्त्र चलाए। उनके इस भयंकर युद्ध से तीनों लोक कंपायमान हो गए। देवी द्वारा छोड़े गए अस्त्रों को शुम्भ ने अपने अस्त्रों से काट दिया। इसी प्रकार शुम्भ द्वारा चलाए गए अस्त्रों को देवी ने अपनी भयंकर हुंकार से ही भस्म कर दिया।

दैत्यराज शुम्भ ने सैकड़ों बाण एक साथ चलाकर देवी को ढक दिया तो देवी ने अपने बाणों से शुम्भ का धनुष ही काट दिया। धनुष के कट जाने पर शुम्भ ने शक्ति का प्रयोग किया तो देवी ने उसे भी निस्तेज कर दिया। अब दैत्यराज शुम्भ अपनी तलवार लेकर देवी की ओर लपका परन्तु देवी ने उसकी तलवार व ढाल दोनों को काट दिया।

दैत्यराज का युद्ध में घोड़ा मारा गया, रथ टूट गया और सारथी भी मर गया। अब शुम्भ भयंकर मुद्गर लेकर देवी की ओर लपका तो देवी जगदम्बा ने अपने पैने बाणों से उसके मुद्गर को भी काट दिया। मुद्गर के टूट जाने पर शुम्भ बड़े वेग से देवी को मुक्का मारने के लिए दौड़ा। जैसे ही शुम्भ ने देवी की छाती पर मुक्का मारा तो देवी ने भी शुम्भ की छाती पर एक चाँटा मारा। देवी का चाँटा पड़ते ही दैत्यराज शुम्भ पृथ्वी पर गिर पड़ा, परन्तु पुनः वह उठकर खड़ा हो गया।

अब दैत्यराज शुम्भ अचानक उछला और देवी को लेकर ऊपर आकाश में उड़ गया। अब देवी आकाश में ही शुम्भ के साथ युद्ध करने लगीं। उनके इस युद्ध ने सिद्ध और मुनियों को विस्मय में डाल दिया। इसके बाद देवी ने शुम्भ के साथ काफी समय तक युद्ध करने के पश्चात् उसे उठाकर ज़ोर से घुमाकर पृथ्वी पर पटक दिया। पृथ्वी पर पटके जाने पर भी वह दुष्टआत्मा पुनः खड़ा होकर देवी का वध करने हेतु उनकी ओर बड़े वेग से दौड़ा।

दैत्यराज शुम्भ को अपनी ओर आते देख देवी ने अपने त्रिशूल से उसकी छाती छेदकर पृथ्वी पर गिरा दिया। देवी के त्रिशूल से घायल होने पर दैत्यराज शुम्भ के प्राण पखेरू उड़ गए और वह समुद्रों, द्वीपों तथा पर्वतों सहित समूची पृथ्वी को कम्पायमान करता हुआ पृथ्वी पर आ गिरा। उस दुष्ट असुर के मरते ही सारा संसार प्रसन्नता से नाच उठा।

पहले जो अनिष्ट सूचक मेघ और उल्कापात होते थे वे सभी शान्त हो गए। नदियाँ अपने सही मार्ग से बहने लगीं। देवगण बड़े प्रसन्न हुए तथा गंधर्व सुन्दर गीत गाने लगे, बाजे बजने लगे। अप्सराएँ नाचने लगी, स्वच्छ वायु बहने लगीं, सूर्य की उत्तम प्रभा हो गई। यज्ञादिकों की अग्नियाँ माँ जो शान्त हो गईं थीं अब वह प्रज्जवलित हो गईं तथा सम्पूर्ण दिशाओं का हा-हाकार शान्त हो गया। प्रजा सुखी हो गई और सर्वत्र शान्ति स्थापित हो गई।

सातवाँ दिन

७. कालरात्रि

एक वेणी जपाकर्णपूरा **नग्ना** खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकणी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टक **भूषणा**।
वर्धनमूर्धध्वजा **कृष्णा** कालरात्रिर्भयङ्करी॥

माँ दुर्गा के सातवें स्वरूप को कालरात्रि कहा जाता है। माँ कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यन्त भयानक है, लेकिन ये सदैव शुभ फल देने वाली मानी जाती है। इसलिए इन्हें शुभङ्करी भी कहा जाता है।दुर्गा पूजा के सप्तम् दिन माँ कालरात्रि की पूजा का विधान है। इस दिन साधक का मन ''सहस्रार'' चक्र में स्थित रहता है। उसके लिए ब्रह्माण्ड की समस्त सिद्धियों के द्वार खुलने लगते हैं। इस चक्र में स्थित साधक का मन पूर्णत: माँ कालरात्रि के स्वरूप में अवस्थित रहता है। माँ कालरात्रि दुष्टों का विनाश और ग्रह बाधाओं को दूर करने वाली हैं। जिससे साधक भयमुक्त हो जाता है।

ग्यारहवाँ अध्याय

"देवी देवताओं द्वारा देवी की स्तुति एवं देवी द्वारा देवताओं को वरदान"

ॐ ऋषि बोले–"दैत्यराज शुम्भ के मारे जाने पर इन्द्रादि देवता अग्नि को आगे करके कात्यायनी देवी की स्तुति करने लगे। उस समय अभिष्ट की प्राप्ति के कारण उनके मुख खिले हुए थे।" देवता बोले–"हे शरणागतों के दुख हरने वाली देवी! तुम प्रसन्न हो जाओ। विश्वेश्वरी तुम विश्व की रक्षा करो क्योंकि तुम इस चर-अचर विश्व की अधीश्वरी हो।

हे देवी! आप सम्पूर्ण विश्व की आधार रूप हो क्योंकि आप पृथ्वी रूप में भी स्थित हो और अत्यन्त पराक्रम वाली देवी हो। आप ही जल रूप में स्थित होकर सम्पूर्ण संसार को तृप्त करती हो।

हे देवी! आप विष्णु की शक्ति हो और विश्व की बीज परम् माया हो और आपने ही इस समस्त संसार को मोहित कर रखा है। आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर युक्तियाँ प्राप्ति कराती हो।

हे देवी! सम्पूर्ण विद्या में आपके ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। इस संसार में जितनी महिलाएँ हैं वे सब आपकी ही मूर्तियाँ हैं। एक मात्र आपने ही इस संसार को व्याप्त कर रखा है। आपकी स्तुति किस प्रकार हो सकती है ? आप तो स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे एवं परावाणी हो ? आप परम् बुद्धि रूप हो और सम्पूर्ण प्राणिरूप स्वर्ग और मुक्ति देने वाली हो। अतः इसी रूप में आपकी स्तुति की गई है। आपकी स्तुति के लिए इससे बढ़कर और क्या मुक्ति माँ हो सकती है।

सम्पूर्ण जनों के हृदय में बुद्धिरूप होकर निवास करने वाली स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान वाली है नारायणी देवी! आपको नमस्कार है। कला काष्ठ आदि रूप से अवस्थाओं को परिवर्तन की ओर ले जाने वाली तथा प्राणियों का अन्त करने वाली नारायणी तुमको नमस्कार है।

हे नारायणी! सम्पूर्ण मंगलो के मंगल रूप वाली हे शिवे! हे सम्पूर्ण प्रयोजनों को सिद्ध करने वाली! हे शरणागत वत्सला तीन नेत्रों वाली गौरी! आपको नमस्कार करते हैं। सृष्टि, स्थिति तथा संहार की शक्ति भूता सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्व सुखमयी, नारायणी आपको नमस्कार है। हे शरण में आए हुए शरणागतों, दीन-दुखियों की रक्षा में तत्पर सम्पूर्ण पीड़ाओं को हरने वाली हे नारायणी! आपको हमारा नमस्कार है।

हे नारायणी! आप ब्रह्माणी का रूप धारण करके हंसो से जुते हुए विमान पर बैठती हो तथा कुश से अभिमंत्रित जल छिड़कती रहती हो, आपको नमस्कार है। माहेश्वरी रूप में त्रिशूल, चन्द्रमा और सर्पों को धारण करने वाली हे महा वृषभ वाहन वाली नारायणी! आपको नमस्कार है। मोरों तथा मुर्गों से घिरी रहने वाली महाशक्ति को धारण करने वाली हे कौमारी रूपधारिणी! निष्पाप नारायणी! आपको हम सब देवता नमस्कार करते हैं।

हे शंख, चक्र, गदा और शार्ङ्ग धनुष धारण करने वाली वैष्णवी शक्ति रूपा नारायणी! आप हम पर प्रसन्न हो जाओ, आपको नमस्कार है। हे दाढ़ों पर पृथ्वी को धारण करने वाली वाराह रुपिणी और हाथों में भयानक महाचक्र लिए कल्याणमयी नारायणी! तुम्हें नमस्कार है। हे उग्र नृसिंह रूप से दैत्यों को मारने वाली, त्रिभुवन की रक्षा में संलग्न रहने वाली नारायणी! आपको हम नमस्कार करते हैं।

मस्तक पर मुकुट और हाथ में महावज्र धारण करने वाली, सहस्त्रनेत्रों के कारण उज्जवल, वृत्रासुर के प्राण हरने वाली इन्द्र की शक्ति हे नारायणी! हम आपको नमस्कार करते हैं। हे शिवदूती स्वरूप से दैत्यों के महामद को नष्ट करने वाली हे भयंकर रूपवाली, हे महाशब्द करने वाली हे नारायणी! हम आपको नमस्कार करते हैं। दाढ़ों के कारण विकराल मुखवाली, मुण्डमाला से विभूषित मुण्डमर्दिनी

चामुण्डारूपा नारायणी! आपको हम नमस्कार करते हैं।

हे लक्ष्मी, लज्जा, महाविद्या, श्रद्धा, पुष्टि, स्वधा, ध्रुवा, महारात्रि तथा महाविद्या रूपा नारायणी! आपको हम सब नमस्कार करते हैं। हे मेधा, सरस्वती, सर्वोत्कृष्ट, ऐश्वर्यरूपिणी, पार्वती, महाकाली, नियता (संयम परायणी) तथा ईशरूपिणी नारायणी! हम आपको नमस्कार करते हैं। हे सर्व स्वरूप सर्वेश्वरी, सर्वशक्ति युक्त देवी! हमारी भय से रक्षा करो, आपको नमस्कार है।

हे कात्यायनी! तीनों नेत्रों से विभूषित आपका सौम्य मुख सब तरह के डरों से हमारी रक्षा करे, आपको नमस्कार है। हे भद्रकाली! ज्वालाओं के समान भयंकर, अति उग्र एवं सम्पूर्ण असुरों को नष्ट करने वाला तुम्हारा त्रिशूल हमें भय से बचावे, आपको नमस्कार है। हे देवी! जो अपने शब्द से इस संसार को पूरित करके दैत्यों के तेज को नष्ट करता है, वह आपका घंटा इस प्रकार हमारी रक्षा करें, जैसे माता अपनी सन्तान की रक्षा करती है, आपको नमस्कार है।

हे चण्डिके! असुरों के रक्त और चर्बी से चर्चित जो आपकी तलवार है, वह हमारा मंगल करे। हम आपको नमस्कार करते हैं। हे देवी! जब आप प्रसन्न होती हो तो सम्पूर्ण रोगों को नष्ट कर देती हो अब जब रुष्ट हो जाती हो तो सम्पूर्ण वांछित कामनाओं को नष्ट कर देती हो और जो प्राणी शरण में

आते हैं। उन पर कभी विपत्ति नहीं आती। बल्कि तुम्हारी शरण में आए हुए मनुष्य दूसरों को आश्रय देने योग्य हो जाते हैं। अनेक रूपों से बहुत प्रकार के स्वरूपों को धारण करके इन धर्म द्रोही असुरों का आपने कई बार संहार किया है, वह तुम्हारे सिवा और कौन कर सकता था।

चतुदर्श विधायें, षटशास्त्र और चारों वेद तुम्हारे ही प्रकाश से प्रकाशित हैं, उनमें आपका ही वर्णन है तथा आपको छेड़कर दूसरी कौन सी शक्ति है जो इस विश्व को अज्ञानमय घोर अंधकार से परिपूर्ण ममता रूपी गड्ढ में निरन्तर भटका रही है। जहाँ राक्षस, विषैले सर्प, लुटेरों की सेना हो, जहाँ दावानल हो, वहाँ और समद्र के बीच में भी तुम साथ रहकर इस विश्व की रक्षा करती हो।

हे विश्वेश्वरी! तुम विश्व का पालन करने वाली विश्वरूपा हो, इसलिए सम्पूर्ण संसार को धारण करती हो। इसलिए ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भी वन्दनीय हो। जो भक्तिपूर्वक तुमको नमस्कार करते हैं, वह विश्व को आश्रय देने वाले बन जाते हैं। हे देवी! आप प्रसन्न हो और असुरों को मारकर जिस प्रकार आपने हमारी रक्षा की है, ऐसी ही हमारे शुत्रओं से सदा हमारी रक्षा करती रहो। सम्पूर्ण संसार के पाप नष्ट कर दो और उत्पाद एवं पापों तथा उनके फलस्वरूप होने वाली महामारी आदि बड़े-बड़े उपद्रवों को शीघ्र ही दूर कर दो।

विश्व की पीड़ा हरने वाली देवी! शरण में पड़े हुए मनुष्यों पर प्रसन्न हो जाओ। त्रिलोक निवासियों की पूजनीय परमेश्वरी हम लोगों को वरदान दो।

देवी ने प्रसन्न होकर देवताओं से कहा–"मैं तुम्हें वरदान देना चाहती हूँ। आपकी जो इच्छा हो वह वर माँग लो। विश्व के उपकार हेतु मैं उसे तुम्हें अवश्य दूँगी।"

देवताओं ने कहा–"हे सर्वेश्वरी! त्रिलोकी के निवासियों की समस्त पीड़ाओं को तुम इसी प्रकार हरती रहो और हमारे शत्रुओं को इसी प्रकार नष्ट करती रहो।"

देवी ने कहा–"वैवस्वत मन्वन्तर के 28वें युग में दो और महाअसुर शुम्भ और निशुम्भ पैदा होंगे। उस समय मैं नन्दगोप के घर में यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होकर विन्ध्याचल पर्वत पर शुम्भ और निशुम्भ का वध करूँगी। फिर अत्यन्त भयंकर रूप से पृथ्वी पर अवतार लेकर मैं वैप्रचिति नामक दानवों का विनाश करूँगी। उन भयंकर महाअसुरों का भक्षण करते समय मेरे दाँत अनार के पुष्प के समान लाल होंगे। इसके बाद देवता स्वर्ग में और मनुष्य पृथ्वी पर मेरी स्तुति करते हुए मुझे रक्त दान्तिका कहेंगे।"

इसके बाद जब सौ वर्षों तक वर्षा नहीं होगी और पानी का अभाव हो जाएगा तो मैं ऋषियों की

स्तुति करने पर आयोनिजा रूप में प्रकट होऊँगी। तब अपने सौ नेत्रों से ऋषियों की ओर देखूँगी। तब मनुष्य शताक्षी नाम से मेरा कीर्तन करेंगे। उसी समय मैं अपने शरीर से उत्पन्न हुए, प्राणों की रक्षा करने वाले शाकों द्वारा सब प्राणियों का पालन करूँगी और जब तक वर्षा नहीं होगी, तब तक वे शाक ही सबके प्राणों की रक्षा करेंगे। तब इस पृथ्वी पर शाकुम्भरी के नाम से विख्यात होऊँगी और इसी अवतार में मैं दुर्गम नामक महाअसुर का वध करूँगी।

दुर्गम का वध करने के कारण मेरा नाम दुर्गा देवी प्रसिद्ध होगा। फिर मैं भयानक रूप धारण कर हिमालय निवासी ऋषियों-महर्षियों की रक्षा करूँगी। उस समय मैं असुरों का भक्षण करूँगी। मुनिगण नम्रता के साथ मेरी प्रार्थना करेंगे। इस प्रकार भविष्य में मेरा नाम भीमा देवी प्रसिद्ध होगा। जिस समय अरुण नामक असुर त्रिलोकी में भयंकर उपद्रव करेगा, उस समय मैं असंख्य भौंरों का रूप धारण कर त्रिलोकी के हित के लिए महाअसुर अरुण का वध करूँगी। तब संसार में मेरा नाम भ्रामरी प्रसिद्ध होगा। इस प्रकार जब-जब विश्व में दानवों का उत्पात बढ़ेगा मैं उस समय अवतार लेकर असुरों का संहार करूँगी।

बारहवाँ अध्याय

देवी चरित्रों के पाठ का महात्म्य

ॐ देवी बोलीं–हे देवताओं! जो पुरुष इन स्त्रोतों के द्वारा एकाग्रचित होकर मेरी स्तुति करेगा, उसके सम्पूर्ण कष्टों को निःसन्देह दूर करूँगी। मधु-कैटभ के विनाश, महिषासुर के वध और शुम्भ-निशुम्भ के वध की जो मनुष्य कथा कहेगा, मेरे माहात्म्य को अष्टमी, चतुर्दशी एवं नवमी के दिन जो मनुष्य एकाग्रचित होकर भक्तिपूर्वक सुनेगा, उनको कभी कोई अनिष्ट स्पर्श नहीं कर सकेगा। पाप नहीं रहेगा, पाप से उत्पन्न हुई विपत्ति उसको हानि नहीं पहुँचा सकेगी। उनके घर में कभी गरीबी नहीं रहेगी और न कभी उनको अपने प्रियजनों का बिछोह होगा। इतना ही नहीं, उन्हें शत्रुओं से, लुटेरों से, राजा से, शस्त्र से, अग्नि तथा जल से कभी भय नहीं रहेगा। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को भक्तिपूर्वक मेरे इस कल्याणकारक महात्म्य को सदैव पढ़ना और सुनना चाहिए। यह परम् कल्याण कारक है।

मेरा यह माहात्म्म महामारी से उत्पन्न हुए सम्पूर्ण उपद्रवों को एवं आध्यात्मिक आदि तीनों प्रकार के उत्पातों को शान्त कर देगा। जिस घर, मन्दिर या जिस स्थान पर मेरा यह स्तोत्र विधि पूर्वक पढ़ा जाता

है। उस स्थान का मैं कभी त्याग नहीं करती और वहाँ सदा मेरा निवास रहता है। बलिदान, पूजा, होम तथा महात्सवों में मेरा यह चरित्र उच्चारण करना तथा सुनना चाहिए।

बलिदान, पूजा, हवन, मनुष्य चाहे जानकर या अनजाने करे मैं उसे तुरन्त ग्रहण कर लेती हूँ। शरद काल में प्रत्येक वर्ष जो महापूजा की जाती है, उसमें जो मनुष्य भक्तिपूर्वक मेरा यह माहात्म्य सुनता है, वह सब विपत्तियों से छूट जाता है और धन-धान्य तथा पुत्रादि से सम्पन्न हो जाता है इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

मेरे इस महात्म्य व प्रादुर्भाव की सुन्दर कथाओं इत्यादि तथा युद्ध में किए गए मेरे पराक्रम को सुनकर मनुष्य निडर हो जाता है। शत्रु नष्ट हो जाते हैं तथा उसका कल्याण होता है। उसका वंश कल्याण के मार्ग पर चलता है जो मेरे माहात्म्य को सुनता है। बुरे स्वप्न दिखाई देने पर ग्रहजनित भयंकर पीड़ा उपस्थित होने पर मेरा माहात्म्य श्रवण करने से छूटकारा मिल जाता है।

सब कष्ट शान्त हो जाते हैं तथा स्वप्न दिखाई देने बन्द हो जाते हैं और दुख इत्यादि सब मिट जाते हैं। बाल गृहों मे ग्रस्ति बालकों के लिए यह मेरा महात्म्य परम शान्ति को देने वाला है। मनुष्यों में फूट पड़ने पर यह भली-भाँति मित्रता करवाने वाला है। यह माहात्म्य समस्त दुराचारियों के बल का

नाश करने वाला है। इसके पाठ मात्र से राक्षसों, भूतों और पिशाचों का नाश हो जाता है।

पशु पुष्प, अर्घ्य, धूप, गन्ध, दीपक इत्यादि सामग्रियों द्वारा पूजन करने पर मेरा यह माहात्म्य मनुष्यों को मेरी जैसी सामर्थ्य की प्राप्ति करवाने वाला है। ब्राह्मणों को भोजन कराकर, हवन करके प्रतिदिन अभिषेक करके नाना प्रकार के भोगों को अपर्ण करके और प्रतिवर्ष दान इत्यादि करके जो मेरी आराधना करते हैं उससे मैं जैसी प्रसन्न होती हूँ वैसी ही प्रसन्न मैं इस चरित्र के सुनने वालों से होती हूँ। यह माहात्म्य श्रवण करने पर पापों को हर लेता है तथा आरोग्य प्रदान करता है।

मेरा प्रादुर्भाव का कीर्तन दुष्ट प्राणियों से रक्षा करने वाला है, युद्ध में दुष्ट दैत्यों का संहार करने वाला है। इसके सुनने से मनुष्यों को शत्रुओं का भय नहीं रहता। हे देवताओं! तुमने और ब्रह्म ऋषियों और ब्रह्माजी ने जो स्तुति की है वह मनुष्यों को कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करने वाली है।

वन में सूने मार्ग में या दावानल से घिर जाने पर जंगल में सिंहों से व्याघ्र से या जंगली हाथियों द्वारा पीछा किए जाने पर, राजा के क्रोध करने पर मारे जाने के भय से या समुद्र में तुफान आने से नाँव के डगमगाने पर, भयंकर युद्ध में फँसा होने पर, किसी भी प्रकार की पीड़ा से पीड़ित घोर बाधाओं से दुखी हुआ मनुष्य मेरे इस चरित्र को स्मरण करने वाला मनुष्य घुटकर पा जाता है। शेर

आदि हिंसक पशु, डाकू तथा शत्रु मेरे चरित्र को स्मरण करने वाले मनुष्य से दूर भाग जाते हैं।

महर्षि बोले–"प्रचण्ड पराक्रम वाली भगवती चण्डिका इस प्रकार कहने के पश्चात् अन्तर्धान हो गईं।" सम्पूर्ण देवता पहले की तरह अपने-अपने यज्ञ के भागों को प्राप्त करने लगे। अब मैं हे राजन! दैत्यों का हाल सुनाता हूँ।

शुम्भ युद्ध में मारा गया तथा उसका पराक्रमी भाई निशुम्भ के मारे जाने पर शेष दैत्य पाताल लोक भाग गए। हे राजन! इस प्रकार भगवती अम्बिका नित्य होती हुई भी बार-बार प्रकट होकर इस जगत का पालन करती हैं, वे ही इसको मोहित करती हैं, जन्म देती हैं और प्रार्थना करने पर समृद्धि प्रदान करती हैं। हे राजन! भगवती ही महाप्रलय के समय महामारी का रूप धारण करती हैं और वही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। वह सनातन देवी प्राणियों का पालन करती हैं। वे ही मनुष्यों के अभ्युदय के समय घर में लक्ष्मी का रूप बनाकर स्थिर हो जाती हैं तथा अभाव के समय दरिद्रता बनकर विनाश का कारण बन जाती हैं। पुष्प, धूप और गन्ध आदि से पूजन करके उनकी स्तुति करने मे वह धन और पुत्र प्रदान करती हैं और धार्मिक बुद्धि तथा उत्तम गति प्रदान करती हैं।

आठवाँ दिन

८. महागौरी

श्वेते वृषे समरूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा॥

माँ दुर्गा के आठवें स्वरूप का नाम महागौरी है। दुर्गा पूजा के आठवें दिन महागौरी की उपासना का विधान है। इनकी शक्ति अमोघ और सद्यः फलदायिनी है। इनकी उपासना से भक्तों के सभी कलुष धुल जाते हैं।

तेरहवाँ अध्याय

राजा सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

मेधा ऋषि बोले–"हे राजन! इस प्रकार मैंने तुमसे देवी के उत्तम माहात्म्य का वर्णन किया है। वे ही विद्या प्रदान करती हैं। भगवान विष्णु की माया स्वरूपा उन भगवती की कृपा से ही तुम यह वैश्य तथा अन्य विवेकीजन मोहित होते हैं और मोहित होते रहेंगे।"

महाराज आप दोनों उन्हीं की शरण में जाओ। वही भगवती आराधना करने पर मनुष्य को भोग, स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करती हैं। मार्कण्डेय जी ने कहा–"महर्षि मेधा की यह बात सुनकर राजा सुरथ महर्षि को प्रणाम करके खड़ा हुआ और राज्य के छिन जाने से उनके मन में बड़ी ग्लानी हुई। राजा सुरथ और वैश्य तपस्या करने के लिए वन में चले गए और नदी के तट पर आसन लगाकर भगवती के दर्शनों की अभिलाषा हेतु तपस्या में लीन हो गए।"

वैश्य देवी के परम् उत्तम सूक्त का जप करने लगा। दोनों राजा और वैश्य ने नदी के तट पर मृतिका से देवी की मूर्ति बनाई। पुष्प, धूप, दीप तथा हवन द्वारा देवी का पूजन करने लगे। पहले उन्होंने आहार को कम कर दिया। इसके बाद निराहार रहकर भगवती में मन लगाकर एकाग्रता से आराधना करने लगे। वे दोनों अपने शरीर के रक्त से देवी को बलि देते हुए तीन वर्ष तक लगातार

भगवती की आराधना करते रहे। तीन वर्ष के बाद देवी ने उनको प्रत्यक्ष दर्शन दिए।

देवी बोलीं–"हे राजन! अपने वंश को प्रसन्न करने वाले वैश्य तुम जिस वर की इच्छा रखते हो वह मुझसे माँग लो। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगी। मैं तुम दोनों पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"

मार्कण्डेय जी बोले–"यह सुन राजा ने अगले जन्म में नष्ट न होने वाला अखण्ड राज्य और इस जन्म में बलपूर्वक अपने शत्रुओं को नष्ट करने के पश्चात् अपना राज्य प्राप्त करने के लिए देवी से वरदान माँगा।"

वैश्य ने भी जिसका चित्त संसार की ओर से विरक्त हो चुका था, भगवती देवी से अपनी ममता तथा अहंकार रूप आसक्ति को नष्ट कर देने वाले ज्ञान को देने के लिए वरदान माँगा। भगवती देवी ने कहा–"हे राजन! तुम शीघ्र ही अपने शत्रुओं को मारकर पुनः अपना राज्य प्राप्त करोगे तथा तुम्हारा राज्य स्थिर रहने वाला होगा। इसके बाद मृत्यु के पश्चात् आप सूर्य देव के अंश से जन्म लोगे। तुम्हारा नाम सावर्णिक होगा तथा इस पृथ्वी पर मनु के नाम से ख्याति प्राप्त करोगे।"

हे वैश्य कुल में श्रेष्ठ आपने जो मुझसे वर माँगा है वह मैं आपको देती हूँ, आपको मोक्ष देने वाली ज्ञान की प्राप्ति होगी। मार्कण्डय जी बोले–"इस प्रकार देवी उन दोनों को मनोवांछित वर प्रदान कर अन्तर्धान हो गईं। इस प्रकार देवी से वरदान प्रकार राजा सुरथ सूर्य देव के अंश से जन्म लेकर इस पृथ्वी पर सावर्णिक मनु के नाम से उत्पन्न होंगे।

देवी सूक्तम्

देवी भगवती बोलीं–"मित्र, वरुण, अग्नि, इन्द्र, रुद्र, वसु, आदित्य विश्व देव और अश्विनी कुमारों,सोम, याग, विश्वकर्मा, सूर्य और ईश्वर नाम के देवों को मैंने ही धारण कर रखा है। जो मनुष्य देवताओं के उद्देश्य से हवन, यज्ञ आदि का अनुष्ठान करते हैं। उनका फल मुझमें ही विद्यमान है। ब्रह्म साक्षात सम्वित ज्ञान रूपा मैं ही हूँ। ब्रह्माण्ड की अधिष्ठात्री पार्थिव और अपार्थिव प्रदान करने वाली मैं ही हूँ। यह ज्ञान ही सब उपासनाओं का मूल है। मैं ही अनन्त जीवों में उपस्थित हूँ। जीवों में अन्नादि खाद्य द्रव्य ग्रहण करने की क्रिया देखना, सुनना, प्राण धारण करना आदि क्रियाएँ मेरे ही कारण सम्भव हैं। देवता भी अनेक भावों से मेरी उपासना करते हैं।

जो मनुष्य मुझे उपरोक्त भावना की दृष्टि से नहीं देखते उनका विनाश अवश्यम्भावी है। मैं जिसे चाहती हूँ, उसे उच्चपद प्रदान करती हूँ। ब्रह्म के दर्शन कराती हूँ, ऋषि और सर्वज्ञान सम्पन्न महर्षि बनाती हूँ। रुद्र के लिए धनुष चलाती हूँ। मेरी आत्मा ने ही जगत पिता ब्रह्मा को उत्पन्न किया है। इसके ऊपरी भाग में आनन्दमय कोष के अन्दर विज्ञानमय कोष में तेरा कारण अवस्थित है। देवता

और मनुष्य मेरे द्वारा ही सेवित है। मैं समस्त लोकों में प्रविष्ट होकर रहती हूँ। मैं जल, वायु की तरह प्रथित होती हूँ। इसी से यह समस्त सृष्टि आरम्भ होती है। इस स्वर्ग तथा मृत्यु लोक के परे भी मैं विद्यमान हूँ। यही मेरी महिमा है।

अपराध क्षमापन स्तोत्र

हे देवी! मुझे मंत्र, यंत्र, स्तुति आह्वान, ध्यान, मुद्रा करना आदि का ज्ञान नहीं है। मैं केवल आपका भजन की करता हूँ। इसलिए मुझे क्षमा प्रदान करें। मैं अज्ञान, दरिद्रता और विरह में लिप्त हूँ। हे माता! अपने चरणों मे त्रुटि समझते हुए भी स्थान देने की कृपा करें। मेरा उद्धार करने की कृपा करें। पृथ्वी की भाँत्रि अपने पुत्रों का सरल स्वभाव जानकर मेरे अपराध क्षमा करें।

मेरा कभी त्याग न करें। हे जगत माता! मैं तुम्हारी आराधना नहीं कर पाता हूँ। फिर भी मैं चाहता हूँ कि आपका स्नेह मेरे ऊपर बना रहे। हे माता! यदि आपकी कृपा मुझ पर बनी नहीं रही तो मैं पेट ही भरता रहूँगा। स्वापाकी, जलपाकी, माधुपाकी होकर भी निराश्रित बना रहूँगा। हे जननी! जपनीय जप

विधियों का ज्ञान प्राप्त करने का क्या तरीका है। चिता की भस्म लगाकर, हलाहल विष का पान करने वाले, जटाधारी, कण्ठ में सर्पों की माला डाले पशुपति शंकर के पति वाली, कपाल हाथ में लिए तीनों लोकों का पालन करने वाली, जगदीश की पदवी देने वाली हे भवानी! मुझे अपने चरणों में स्थान दो।

मुझे न मोक्ष की अभिलाषा है, न सम्पूर्ण वैभव की इच्छा है, न मुझे ज्ञान की आकांक्षा है। मैं आपकी सेवा करता रहूँ, मेरी यही इच्छा है। हे माता! मैं आपसे विनती करता हूँ कि जन्म-जन्मान्तर तक आपके चरणों की सेवा में लिप्त रहूँ। हे शिवानी! आप यदि किंचित मात्र भी मुझ अनाथ पर कृपा कर दो तो मेरा जन्म सफल हो जाए। हे दुर्गे! दयानिधे! मैं भूख प्यास के समय भी आपका स्मरण करता रहूँ। हे जगदम्बे! इससे विचित्र और क्या बात हो सकती है कि आप अपनी कृपा से मुझे परिपूर्ण कर दो। अपराधी होते हुए भी हे माता! मैं आपकी कृपा से वंचित न रह जाऊँ, मेरी यही अभिलाषा है। हे महादेवी! आप जो उचित समझें वैसा मेरे साथ व्यवहार करें।

सिद्धकुंजिका स्तोत्र

मंत्र–ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हूँ क्लीं जूँ सः ज्वालय-ज्वालय ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

कुंजिका स्तोत्र– शिव स्वरूपिणी, मधु-कैटभनाशिनी, महिषासुरघातिनी और शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्यों को नष्ट करने वाली आपको नमस्कार है। हे महादेवी! आप मेरे जप को सिद्ध करें। आप 'ऐं' रूप से जगत की उत्पत्ति, 'ह्रीं' रूप से पालन करने वाली, 'क्लीं' रूप से संहार करने वाली, 'चामुण्डा' रूप से चण्ड नामक दैत्य का वध करने वाली, 'विच्चे' रूप से अभय प्रदान करने वाली, नवार्ण मंत्र स्वरूप वाली हे जगदम्बा! आपको नमस्कार है। धां धीं धूँ स्वरूप धूर्जटी की पत्नी, वां वीं वूं स्वरूप वाणी की अधीश्वरी, सरस्वती, क्रां क्रीं क्रूं रूपिणी कालिका, शां शीं शूं स्वरूपिणी शान्ति देवी! मेरा कल्याण करें।

हुं हुं स्वरूप वाली हुंकार रूपिणी देवी, जं जं जं रूपिणी जम्भनादिनी देवी तथा भ्रां भ्रीं भ्रूं

स्वरूप वाली भैरवी, भद्रा तथा भवानी नमस्कार है। 'अं कं चं टं तं' से 'कुरु कुरु स्वाहा' तक पाठ करें। पां पीं पूं स्वरूपिणी पार्वती, पूर्णाः खां खीं खूं रूपिणी खेचरी एवं म्लां म्लीं म्लूं मूल विस्तीर्ण रूपिणी कुंजिका देवी को नमस्कार है। सां सीं सूं स्वरूप वाली दुर्गा सप्तशती के समस्त मंत्रों की सिद्धि हे देवी! मुझे प्राप्त हो। जो देवी सब प्राणियों में तृष्णा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सभी प्राणियों में निद्रा रूप में स्थित हैं उनको नमस्कार है। जो देवी सभी प्राणियों में क्षुधा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में शान्ति, क्षमा रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में कांति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सब प्राणियों में माता रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार है। जो देवी सब इन्द्रियों की और संसार भर के प्राणियों की अधिष्ठात्री हैं तथा सब प्राणियों में निरन्तर व्याप्त हैं, उनको बारम्बार नमस्कार है। जो देवी सम्पूर्ण संसार में चैतन्य रूप से व्याप्त होकर स्थित हैं, उनको नमस्कार है। पूर्व समय में अपने अभिष्ट फल को पाने के लिए सभी देवताओं ने जिनकी स्तुति की थी, इन्द्र ने बहुत दिनों तक जिनकी सेवा की थी, वह सभी मंगलों की कारण भूता ईश्वरी हमारा मंगल और कल्याण करें तथा सभी विपत्तियों का नाश करें।

नवरात्रों में कन्या पूजन

हे दुर्गा देवी के भक्तों! देवी की प्रसन्नता के लिए नवरात्रों में अष्टमी अथवा नवमी के दिन कुमारी कन्याओं को खिलाने का विधान है। इन कन्याओं की संख्या ९ हो तो अति उत्तम है, नहीं तो दो कन्याओं से भी काम चल सकता है। कन्याओं की आयु २ वर्ष से ऊपर तथा १० वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। दो वर्ष की कन्या कुमारी तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति, चार वर्ष की कन्या कल्याणी, पाँच वर्ष की कन्या रोहिणी, छः वर्ष की कन्या कालिका, सात वर्ष की चण्डिका, आठ वर्ष की कन्या शाम्भवी, नौ वर्ष की कन्या दुर्गा तथा दस वर्ष की कन्या सुभद्रा मानी जाती है। इनको नमस्कार करने के मंत्र निम्नलिखित हैं–

(१) कौमाटर्यै नमः (२) त्रिमूर्त्यै नमः (३) कल्याण्यै नमः (४) रोहिण्यै नमः
(५) कालिकायै नमः (६) चण्डिकायै नमः (७) शाम्भव्यै नमः (८) दुर्गायै नमः
(९) सुभद्रायै नमः।

कुमारी कन्याओं में हीनांगी, अधिकांगी या कुरूपा नहीं होनी चाहिए।

भोजन करने के बाद उन कन्याओं को दक्षिणा देनी चाहिए। इस प्रकार महामाया भगवती प्रसन्नता से हमारे मनोरथ पूर्ण करती हैं।

नौवाँ दिन

९. सिद्धिदात्री

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

माँ दुर्गा की नवीं शक्ति को सिद्धिदात्री कहते हैं। जैसा नाम से प्रकट है ये सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाली हैं। नव-दुगाओं में माँ सिद्धिदात्री अन्तिम हैं। इनकी उपासना के बाद भक्तों की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

देवी के लिए बनाए नैवेद्य की थाली में भोग का समान रखकर निम्न रूप से प्रार्थना करनी चाहिए।

माँ का भोग

भोगो हे भोगो मैया, भोगो हे भोगो, तेरी मेरी अबला माय मेरा मन यूँ ही पतियायो।
बथुए की भाजी देवा अथक बनाई, खीर खांड देवा और मिठीयाई,
सन्त प्यारों का दाना, बाले भोलों की दाना, निपट गरीबों का दाना।
माता ले घर आए तै मेरा मन यूँ ही पतियायो॥
ऐ माँ दास वशिष्ठ तेरा भोग ले आया,
मुरारी भगत! तेरा भोग ले आया, राज रूपेश्वर! तेरा भोग ले आया।
धानु रे भक्त तेरा भोग ले आया, राजा रे हरिश्चन्द्र तेरा भोग ले आया।
रानी तारा दे तेरा भोग ले आई, सन्त और सेवक तेरा भोग ले आए।
भक्त सवैया तेरा भोग ले आए, भोगो हे भोगो मैया भोंगो हे॥

सोने का गड़वा गंगाजल पानी, सोने की झारी गंगाजल पानी।
ऐसा ठंडारा-ठंडरा पानी, ऐसा मिठरा-मिठरा पानी।
पियो-पियो मेरी आदिभवानी, नगरकोट रानी।
आशा देवी, मनसा देवी, अष्ट भुजी छत्र भुजी।
तै मेरी कालका महारानी पियो हे पियो मैया
पानों का बीड़ा तेरा भोला जन लाया, पान सुपारी तेरा धानु जन लाया।
चाबो हे चाबो मैया, चाबो हे चाबो चण्डी, मेरा मन यूं ही पतियायो।

भोग समर्पण के पश्चात् दुर्गा चालीसा, विन्ध्येश्वरी चालीसा, विन्ध्येश्वरी स्तोत्र का पाठ करके श्री दुर्गाजी की आरती करके नवरात्रों को हाथ जोड़कर विदा किया जाता है व्रत रखने वाले नर-नारी इस प्रकार से पूजा समाप्त करके भोजन करें और सामान्य व्यवहार व्यापार प्रारम्भ करें।

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुःख हरनी।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूं लोक फैली उजियारी।
शशि ललाट मुख महा विशाला, नेत्र लाल भृकुटी विकराला।
रूप मातु को अधिक सुहावे, दरश करत जन अति सुख पावे।
तुम संसार शक्ति लय कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना।
अन्नपूरना हुई जग पाला, तुम ही आदि सुन्दरी बाला।
प्रलयकाल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं, ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं।
रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा, परगट भई फाड़ कर खम्बा।

रक्षा करि प्रहलाद बचायो, हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो।
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं।
क्षीरसिन्धु में करत विलासा, दया सिन्धु दीजै मन आसा।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जात बखानी।
मातंगी धूमावती माता, भुवनेश्वरी बगला सुख दाता।
श्री भैरव तारा जग तारिणी, छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी।
केहरि वाहन सोह भवानी, लांगुर वीर चलत अगवानी।
कर में खप्पर खड्ग विराजे, जाको देख काल डर भाजे।
सोहे अस्त्र और त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला।
नाग कोटि में तुम्हीं विराजत, तिहूं लोक में डंका बाजत।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्तबीज शंखन संहारे।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघ भार मही अकुलानी।

रूप कराल काली को धारा, सेन सहित तुम तिहि संहारा।
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब, भई सहाय मातु तुम तब-तब।
अमर पुरी औरों सब लोका, तब महिमा सब रहे अशोका।
बाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हें सदा पूजें नर नारी।
प्रेम भक्ति से जो जस गावै, दुःख दारिद्र निकट नहिं आवे।
ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई, जन्म मरण ताको छुटि जाई।
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी।
शंकर आचारज तप कीनों, काम अरु क्रोध जीति सब लीनों।
निशि दिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहिं सुमिरो तुमको।
शक्ति रूप को मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछितायो।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी, जय जय जय जगदम्ब भवानी।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहीं कीन विलम्बा।

मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।
आशा तृष्णा निपट सतावे, रिपु मुरख मोहि अति डरपावे।
शत्रु नाश कीजै महारानी, सुमिरौं इक चित तुम्हें भवानी।
करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला।
जब लगि जियौं दया फल पाऊँ, तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ।
दुर्गा चालीसा जो गावैं, सब सुख भोग परम पद पावैं।
देवीदास शरण निज जानी, करहु कृपा जगदम्ब भवानी।

॥ दोहा ॥

शरणागत रक्षा करे, भक्त रहे निःशंक।
मैं आया तेरी शरण में, मातु लीजिए अंक॥

श्री विन्ध्येवरी चालीसा

॥ दोहा ॥

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्त जनों के काज में करती नहीं विलम्ब॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय विन्ध्याचल रानी, आदि शक्ति जग विदित भवानी।
सिंहवाहिनी जय जगमाता, जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता।
कष्ट निवारिणी जय जग देवी, जय जय सन्त असुर सुर सेवी।
महिमा अमित अपार तुम्हारी, शेष सहस मुख वर्णत हारी।
दीनन के दुख हरत भवानी, नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी।
सब कर मनसा पुरवत माता, महिमा अमित जगत विख्याता।
जो जन ध्यान तुम्हारो लावै, सो तुरतहिं वांछित फल पावै।
तू ही वैष्णवी तू ही रुद्रानी, तू ही शारदा अरु ब्रह्माणी।

रमा राधिका श्यामा काली, तू ही मातु सन्तन प्रतिपाली।
उमा माधवी चण्डी ज्वाला, बेगि मोहि पर होहु दयाला।
तू ही हिंगलाज महारानी, तू ही शीतला अरु विज्ञानी।
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता, तू ही लक्ष्मी जग सुख दाता।
तू ही जाह्नवी अरु उत्राणी, हेमावती अम्ब निरवाणी।
अष्ट भुजी वाराहिनी देवा, करत विष्णु शिव जाकर सेवा।
चौसट्टी देवी कल्यानी, गौरी मंगला सब गुण खानी।
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी, भद्रकालि सुन विनय हमारी।
वज्र धारिणी शोक नाशिनी, आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी।
जया और विजया बैताली, मात संकटी अरु विकराली।
नाम अनन्त तुम्हार भवानी, बरनै किमि मानुष अज्ञानी।
जापर कृपा मात तव होई, तो वह करै चहै मन जोई।
कृपा करहु मोपर महारानी, सिद्ध करिए अब यह मम बानी।
जो नर धरै मात कर ध्याना, ताकर सदा होय कल्याना।
विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै, जो देवी का जाप करावै।

जो नर कहं ऋण होय अपारा, सो नर पाठ करे शतबारा।
निश्चय ऋण मोचन होई जाई, जो नर पाठ करे मन माई।
अस्तुति जो नर पढ़ै पढ़ावै, या जग में सो अति सुख पावै।
जाको व्याधि सतावे भाई, जाप करत सब दूर पराई।
जो नर अति बन्दी महँ होई, बार हजार पाठ कर सोई।
निश्चय बन्दी ते छुटि जाई, सत्य वचन मम मानहु भाई।
जापर जो कछु संकट होई, निश्चय देविहिं सुमिरे सोई।
जा कहँ पुत्र होय नहिं भाई, सो नर या विधि करे उपाई।
पाँच वर्ष सो पाठ करावे, नौरातन में विप्र जिमावे।
निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी, पुत्र देहिं ताकहँ गुणखानी।
ध्वजा नारियल आन चढ़ावे, विधि समेत पूजन करवावे।
नित्य प्रति पाठ करे मन लाई, प्रेम सहित नहिं आन उपाई।
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा, रंक पढ़त होवे अवनीसा।
यह जनि अचरज मानहुँ भाई, कृपा दृष्टि जापर हुई जाई।
जय जय जय जग मातु भवानी, कृपा करहु मोहिं पर जन जानी।

विन्ध्येश्वरी स्तोत्र

निशुम्भ शुम्भ मर्दिनी प्रचण्ड मुण्ड खण्डनी। बने रणे प्रकाशिनी भजामि विन्ध्यवासिनी॥

त्रिशूल मुण्ड धारिणी धरा विघात हारिणी। गृहे-गृहे निवासिनी भजामि विन्ध्यवासिनी॥

दारिद्र दुःख हारिणी सुता विभूति कारिणी। वियोग शोक हारिणी भजामि विन्ध्यवासिनी॥

लसत्सुलाल-लोचनं लतासनं वरं प्रदं। कपाल शूलधारिणी भजामि विन्ध्यवासिनी॥

करौ मुदा गदाधरी शिवा शिवः प्रदायिनी। वरा वरानना शुभां भजामि विन्ध्यवासिनी॥

ऋषीन्द्र जामिनी प्रदं त्रिधास्य रूप धारिणी। जले थले निवासिनी भजामि विन्ध्यवासिनी॥

विशिष्ट शिष्ट कारिणी विशाल रूप धारिणी। महोदरे विलासिनी भजामि विन्ध्यवासिनी॥

पुरंदरादि सेवितां सुरारि वंश खण्डिताम्। विशुद्ध बुद्धि कारिणी भजामि विन्ध्यवासिनी॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशि दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को। उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको॥ जय.....
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्तपुष्प की माला कंठन पर साजै॥ जय.....
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी। सुर-नर-मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी॥ जय.....
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥ जय.....
शुम्भ-निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती॥ जय.....
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणिज बीज हरे। मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे॥ जय.....
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय.....
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू॥ जय.....
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥ जय.....
भुजा चार अति शोभित वरमुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी॥ जय.....
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती। श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥ जय.....
अम्बे की आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी सुख-सम्पत्ति पावे॥ जय.....